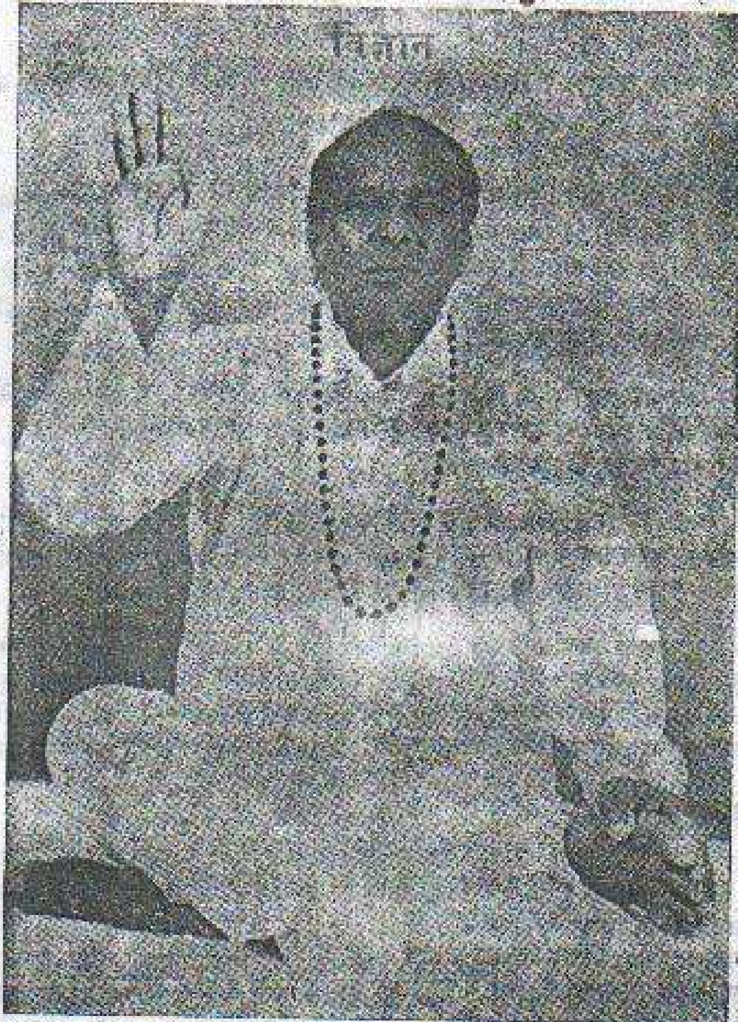
मंत्र·तंत्र·यंत्र



अगस्त-९०

आर्थिक उन्नति
एवं समस्त रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय निवारण के लिए
इस बार
शरद पूर्णिमा प्रयोग सम्पन्न करके देख लीजिये न !

सभी ग्रहों की गति भिन्न प्रकार की होती है, और सभी ग्रह अपना अलग-अलग प्रभाव आप पर डालते हैं, इन ग्रहों के प्रभाव स्वरूप ही आपके जीवन की एक धारा निर्धारित होती है, लेकिन इसके बावजूद भी ऐसा क्यों होता है, कि किसी दिन तो आप विशेष प्रसन्न रहते हैं, और किसी दिन बिना कोई विशेष कारण के एक उदासी सी रहती है, कोई कार्य करने की इच्छा ही नहीं होती, और कभी-कभी विशेष चिड़चिड़ापन आ जाता है।

यह विशेष प्रभाव पुरुषों और स्त्रियों दोनों पर होता है, लेकिन यह देखने में आया है, कि स्त्रियां विशेष प्रभावित होती हैं, और उनके दैनिक आचरण में परिवर्तन तीव्र होते हैं, यह स्थिति आप ने अपने बच्चों में भी अनुभव की होगी।

जहां तक ग्रहों का सम्बन्ध है, कोई ग्रह तेज गति से भ्रमण करता है, तो कोई धीमी गति से और उसी गति के अनुरूप आप पर प्रभाव पड़ता है, सूर्य एक मास में राशि परिवर्तन करता है, तो शनि ढाई वर्ष में राशि परिवर्तन करता है, यही तो गोचर प्रभाव कहलाता है।

चन्द्रमा पृथ्वी का सबसे नजदीक ग्रह होने के कारण यह अपना प्रभाव सभी व्यक्तियों पर यहां तक पशु-पक्षियों तथा वनस्पतियों पर भी विशेष रूप से डालता है, और यह एक राशि से दूसरी राशि में ढाई दिन में ही परिवर्तन कर लेता है, चन्द्रमा ही मनुष्य के स्वभाव को नियन्त्रित करता है, उसके साथ ही यह ग्रह सौम्यता, भावुकता, प्रसन्नता, सुन्दरता, पाचन आदि का कारक ग्रह है।

शरद पूर्णिमा

आश्विन मास को शक्ति साधना का पर्व मास माना गया है, और इस मास, श्राद्ध की पूर्णता के पश्चात नवरात्रि प्रारम्भ होती है, विजयादशमी का महापर्व आता है, दूसरी ओर कार्तिक मास लक्ष्मी, जो कि जीवन में सौभाग्य, श्रेष्ठता, श्री वृद्धि प्रदान करने वाली, लक्ष्मी के विभिन्न पर्व धनत्रयोदशी, रूपचतुर्दशी, दीपावली का मास है, इन दोनों महाशक्तियों के महा मासों के संधि काल में एक विशेष पर्व आता है, और यह महापर्व शरद पूर्णिमा का पर्व है, इस वर्ष यह शरद पूर्णिमा पर्व ३-१०-९० को है।

अहोभाव–महोत्सव

नवरात्रि–पर्व

१९-९-९० – २७-९-९०

नवरात्रि पर्व, जीवन के संचित पुण्यों का समग्र सौभाग्यशाली पर्व, एक ऐसा महोत्सव, जो इस बार विशेष रूप से सम्पन्न किया जा रहा है।

आप अपनी श्रद्धा एवं मन्त्र के बल पर नवरात्रि में भगवती जगदम्बा को प्रत्यक्ष प्रगट करते हुए उसके प्रति अहोभाव प्रदर्शित करें।

नृत्य, संगीत, मधुरता एवं गुरुदेव के सान्निध्य में दुर्लभ महोत्सव। साधना, सिद्धि एवं प्रसन्नता के सागर में गुरुदेव के साथ चिन्तन करने का अद्वितीय अवसर।

आपको तो हृदय से निमन्त्रण।

यह साधना पर्व है, अहोभाव महोत्सव है, अतः वे ही साधक आने का कष्ट करें, जो साधना शुल्क देते हुए साधना शिविर में भाग लें, व्यर्थ में घूमने, देखने, या समय बरबाद करने के लिए इस महोत्सव में आना निषेध है।

क्योंकि इस महोत्सव में कई विशेष प्रयोग सम्पन्न हो रहे हैं।

संकल्प शक्ति के धनी

अपनी जबान के पक्के

उन सदस्यों के नाम, जिन्होंने ऑफसेट मशीन के लिए वायदे के मुताबिक धनराशि भेज दी।

● सज्जन सिंह सिवाच	:	सेमण
● जयेश एस. देसाई	:	बलसाड़
● शचीन्द्र कुमार सक्सेना	:	आगरा
● श्रीमती प्रवीणा मजमूदार	:	देवलाली
● कुमारी ऊषा पासलकर	:	धार
● एन. एस. मजमूदार	:	देवलाली
● विनोद कुमार	:	दिल्ली
● विजय व्यास	:	बड़ौदा
● महावीर प्रसाद दुबे	:	झांसी
● चन्द्रभान धारीवाल	:	दिल्ली
● चन्द्र प्रकाश सोनी	:	नरसिंह गढ़
● रामकृष्ण जायसवाल	:	रीवा
● श्रीमती शील गुलिया	:	रोहतक
● देवजी भाई गोरधन भाई सवानी	:	सूरत
● प्रेम कुमार कम्बोज	:	रायबरेली
● के. के. धाड़से	:	आठनेर
● गोविन्द डाबी	:	पूना
● वल्लभ उपाध्याय	:	अलीगढ़
● राजेन्द्र सिंह	:	हावड़ा
● शशिपाल सैनी	:	शाहबाद मरकण्डा

* डॉ० लल्लूभाई पटेल – बम्बई
* मेहीलाल जायसवाल – भदोही
* भूराराम – पोसालिया
* अरविन्द कुमार श्रीवास्तव – विजयपुर
* श्री मनजी भाई – सूरत
* प्रमोद कुमार गुप्ता – पूर्णिया
* सत्यनारायण – बांदा
* जवाहर लाल साहू – दल्ली राजहरा
* कैलाशनाथ मिश्र – आजमगढ़
* श्रीमती शांता डुमसिया – बम्बई
* अनिल एम० पटेल – बड़ौदा
* राजकुमार यादव – सरगुजा
* प्रवीण जोशी – बड़ौदा
* हरिशंकर श्रीवास्तव – शिवपुरी
* पूर्ण चन्द्र – दिल्ली
* कर्मदत्त शर्मा – मण्डी
* हरख जी भाई डी. पटेल – उदय नगर
* जी. एल. कौल – पूना
* फणीन्द्र – धमोट
* प्रभुभाई रामभाई प्रजापत – बम्बई
* सुभाष चन्द्र – झांसी
* कनकराज – थाना

● यह सूची ३१-७-९० तक की है, शेष सूची अगले अंक में प्रकाशित होगी।

गुरु पूर्णिमा पर निश्चय हुआ था, कि एक महीने के भीतर-भीतर धनराशि भेज दें, जिससे समय पर ऑफसेट मशीन का आर्डर दिया जा सके।

हमें विश्वास है, कि पूरे भारतवर्ष के साधकों के सामने मशीन हेतु जो एनाउन्स किया है, उससे सम्बन्धित राशि यह पत्रिका प्राप्त होते ही भिजवा देंगे, जिससे उनका शुभ नाम प्रकाशित किया जा सके, और धन्यवाद पत्र भेजा जा सके।

उफ !

अगले अंक में उन सदस्यों के नाम भी प्रकाशित होंगे, जिन्होंने एनाउन्स तो किया, पर सम्बन्धित धनराशि भेजी नहीं है।

यह उनके लिए पूरे भारतवर्ष के साधकों के सामने कितनी शर्मनाक बात होगी ?

निखिलेश्वरानंद-स्तवन

एक पवित्र, दिव्य और अद्वितीय ग्रंथ

जो अभी-अभी प्रकाशित हुआ है

मूल्य–बारह रुपये (लागत मात्र)

- आप साधक हैं, और इससे भी बढ़ कर आप परम पूज्य गुरुदेव के प्रिय शिष्य हैं, आपके घर में तो यह ग्रन्थ रहना ही चाहिये।
- पर सच्चे शिष्य का कर्तव्य यहीं समाप्त नहीं हो जाता, आप समर्थ हैं, प्रत्येक शिष्य इसकी कम से कम पांच प्रतियां तो मंगाएं ही, और अन्य लोगों को निःशुल्क वितरित कर दें।
- यह गुरु ऋण चुकाने की प्रक्रिया है, सही शिष्य कहलाने का गौरवमय क्षण है, पूज्य गुरुदेव की आज्ञा है।
- धनराशि अभी मत भेजिये, यह संकल्प पत्र भर कर भेज दीजिये, वी०पी० आने पर पोस्टमेन को धनराशि दे कर पुस्तकें छुड़वा लें।

संकल्प-प्रपत्र

मैं पूज्य गुरुदेव का प्रिय शिष्य हूं, और उनकी आज्ञा शिरोधार्य है, आप "निखिलेश्वरानंद-स्तवन" की ....(यहां संख्या लिखिये) की प्रतियां मुझे डाक खर्च जोड़ कर वी. पी. से भेज दें, मैं वी. पी छुड़ाने का वायदा करता हूं।

मेरा पूरा नाम..

मेरा पूरा पता..

....

हस्ताक्षर

वर्ष-१०

अंक-८

अगस्त-१९९०

* * * * * * * * * * * *

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मरताम् ।।

हे महादेवी ! हे जगदम्बा ! आपको मैं निरन्तर स्मरण करता हूं, आप कल्याण करने वाली और पूर्णता प्रदान करने वाली हैं, आप मेरा श्रद्धायुक्त प्रणाम स्वीकार करें ।

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

नवरात्रि पर्व तो मां से सब कुछ प्राप्त कर लेने का पर्व है पर आपकी उपस्थिति तो अनिवार्य है न!

अहोभाव का तात्पर्य है, नवरात्रि पर कुछ विशिष्ट क्रिया और साधनाएं, गुरु के मुंह से सुनना और उन्हें कार्यान्वित करना, अहोभाव का तात्पर्य है, कि अब तक जीवन में जो कुछ हम प्राप्त नहीं कर सके हैं, वह सब एक ही झटके में प्राप्त कर लेना, अहोभाव का तात्पर्य है, अपने जीवन को पूर्णता की ओर अग्रसर कर लेना और वह सब कुछ प्राप्त कर लेना जो हमारे जीवन में न्यूनता है, जो हमारे जीवन में कमियां हैं, और जिनकी वजह से हम परेशानी, बाधा, चिन्ता और कठिनाइयों में हैं।

इसीलिए तो इस बार एक विशिष्ट चैलेन्ज उठाया है, एक विशेष रास्ता चुना है, "अहोभाव महोत्सव" के रूप में नवरात्रि पर्व को मनाने का, उन क्रियाओं और साधनाओं के माध्यम से तपस्या करना, कि जिससे हम एक ही बार में अपने जीवन की बाधाओं को समाप्त कर सकें, और अपने जीवन की सभी दृष्टियों से पूर्णता और सफलता प्रदान कर सकें।

संकल्प

इस बार गुरु पूर्णिमा अवसर पर हम सभी उपस्थित और अनुपस्थित साधकों और शिष्यों ने एक ही प्रतिज्ञा ली थी, कि इस बार हम में से प्रत्येक साधक और शिष्य अपने साथ पांच नये साधक ले कर इस अहोभाव महोत्सव में भाग लेगा।

और हम अपने वचनों पर, गुरु के सामने ली हुई शपथ पर दृढ़ हैं, और इसी तैयारी के साथ अहोरात्रि महोत्सव (नवरात्रि शिविर) में भाग लेने आ रहे हैं।

पर उनके लिए यह तो जरूरी ही है, कि आप इस महोत्सव में साक्षीभूत हों, आपको कुछ विशेष क्रियाएं, साधनाएं या तपस्या करने की जरूरत नहीं है, आपको तो केवल उपस्थित रहना है, जिससे कि जब अहोभाव महोत्सव में पूर्णता आ सके और जब मां जगदम्बा प्रदान करने के लिए उपस्थित हों तब आप उनके सामने उपस्थित दिखाई दें, तब आप साक्षीभूत हों, तब आप दामन फैलाए मां जगदम्बा के सामने प्रत्यक्ष हों।

और उनके लिए जरूरत है, नम्र होने की, विनीत और मधुर होने की, इस महोत्सव में साक्षीभूत होने की, और सर्वथा रिक्त होने की, क्योंकि जो रिक्त है, उसी को तो भरा जा सकता है, जो पहले से ही झूठ, छल, कपट और दम्भ से भरा हुआ है, उसे और प्रदान किया भी क्या जा सकता है, लबालब भरे हुए दिये में तेल की एक बूंद भी नहीं डाली जा सकती, गुरु की अवज्ञा और अहंकार से भरे हुए साधक को मां जगदम्बा कुछ देना भी चाहे, यदि कुछ प्रदान करना भी चाहे, तो कैसे प्रदान करेगी?

इसीलिए तो मैं कहता हूं, कि इस बार का तो नवरात्रि शिविर लीक और परम्परा से हटकर है, इस बार का नवरात्रि-पर्व अपने आप में अनूठा है, इस बार गुरुदेव इस पर्व को नवरात्रि पर्व के रूप में नहीं, अपितु "अहोभाव महोत्सव" के रूप में सम्पन्न कराने जा रहे हैं, पर इस अहोभाव महोत्सव में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है, क्योंकि पात्र तो आप हैं, और मां जगदम्बा, जो कुछ प्रदान करेगी, वह आपको प्राप्त करना है, ऐसा न हो कि मां जगदम्बा अपनी दसों भुजाओं से आपको सब कुछ प्रदान करना चाहे और आप उपस्थित न हों, मां अपने होठों से आपको पुकारे, और आप अनुपस्थित हों, मां आपको संकेत करके बुलाए, और आप दिखाई ही न दें।

और इसके लिए कोई विशेष तैयारी की जरूरत नहीं है, जरूरत है साधक की, जो इस हौसले और हिम्मत के साथ साधक के रूप में इस महोत्सव में भाग लें, कि मैं सब कुछ प्राप्त करना चाहूंगा, मां न मालूम कब बुला ले, कब मेरी झोली खुशियों से भर दे, कब मुझे वह सब कुछ प्रदान कर दे, जो कि मेरी इच्छाएं हैं, धन, दौलत, यश, वैभव, पुत्र, पौत्र, बन्धु, गृहस्थ सुख, ऐश्वर्य, स्वास्थ्य और पूर्णसिद्धि, यह सब कुछ आपके पास ही है, बस जरूरत है आपको नम्र होने की जरूरत है, आपको गुरुमय होने की जरूरत है, आपको अहोभाव होने की है।

अहोभाव महोत्सव का तात्पर्य जीवन में जो कुछ कमी है, जो कुछ न्यूनता है, उसे एक ही बार में समाप्त कर देना है, और मां के चरणों में बैठ कर उनके प्रत्यक्ष दर्शन करना, तथा आठों भुजाओं से वह जो कुछ प्रदान करे उसे प्राप्त करना।

●

धन, दौलत, यश, वैभव, प्रतिष्ठा, स्वास्थ्य आदि सब कुछ प्राप्त करने के पर्व को ही "अहोभाव महोत्सव" कहा जाता है, क्योंकि यह सर्वथा नवीन पद्धति से सम्पन्न किया जा रहा है, जिससे कि यदि आप समर्पित हैं, यदि आप मां के प्रति श्रद्धायुक्त हैं, तो सब कुछ एक ही बार में प्राप्त कर सकते हैं।

अहोभाव महोत्सव सैर, सपाटे या घूमने, फिरने का पर्व नहीं है, केवल वही व्यक्ति या साधक उपस्थित हों जो शिविर में भाग लेते हों, जो शिविर में भाग नहीं ले रहे हों उन्हें कष्ट उठाने की जरूरत नहीं है, उन्हें यहां आने की और भीड़ में शामिल होने की आवश्यकता नहीं है।

आना है तो नियमों का पालन करते हुए, समर्पण और श्रद्धा के साथ मां जगदम्बा से सब कुछ प्राप्त करने का भाव लिए हुए, और शिविर में साधक के रूप में अपने आप को प्रस्तुत करते हुए।

इस अहोभाव महोत्सव में केवल वे ही उपस्थित हों, जो शिविर में भाग लेने के आकांक्षी हों।

यह शिविर खेलने, कूदने या केवल नाचने के लिए ही नहीं है, सैर सपाटे के लिए यह शिविर नहीं है, यह शिविर पूर्णतः नम्र होने के लिए है, नियमों के अनुसार शिविर में भाग लेने के लिए और जो मन्त्र बताये जांय, जो क्रिया समझाई जाय, उसे सम्पन्न करने के है, और यदि ऐसा हुआ, तो कहीं न कहीं, कभी न कभी किसी भी क्षण मां आवाज दे देगी दुलार से पुत्रवत स्नेह करती हुई तुम्हारे सिर हाथ हाथ फेरेगी, वर्षों से जो जगदम्बा के दर्शन करने की इच्छा तुम्हारे मन में है, जिन अभावों या बाधाओं से तुम जूझ रहे हो उनसे हमेशा-हमेशा के लिए सर्वथा मुक्त होने की है, आप जितनी श्रद्धा के साथ समर्पण युक्त बन सकोगे, उतना ही जल्दी यह सब कुछ प्राप्त हो सकेगा, आप जितने ही ज्यादा नम्र हो कर चरणों में एकाकार हो सकोगे, उतनी ही जल्दी आपको सब कुछ प्राप्त हो सकेगा।

और इस बार यह पर्व एक अनोखा संदेश, एक अनोखी रोशनी ले कर उपस्थित हुआ है, और तुम्हें अन्धकार में इस बार नहीं रहना है, इस बार घर में सिमिट कर नहीं बैठ जाना है, अपितु पूरे परिवार के साथ मां जगदम्बा के अहोभाव महोत्सव में भाग लेना है, न मालूम कब तुम्हें निमन्त्रण मिल जाय, न मालूम कब तुम में समर्पण आ जाय, और न मालूम कब मां की कृपा दृष्टि तुम पर अमृत की तरह बरस जाय।

इस बार हम नहीं, मां जगदम्बा स्वयं आपको आवाज दे रही है, अपने पास बुला रही है, अपने श्री चरणों में समर्पित होने के लिए निमन्त्रण दे रही है। ●

तुम पहले साधक हो, बाद में कुछ और, फिर इस बार तो जिन्दगी का सबसे शानदार अवसर आपके पास आ रहा है "अहोभाव महोत्सव" के रूप में। तुम्हें साधक और केवल "साधक" के रूप में इस बार भाग लेना ही है।



इस बार हम नहीं, मां जगदम्बा स्वयं आपको आवाज दे रही है, अपने पास बुलाने का निमन्त्रण दे रही है, सब कुछ प्रदान करने का भाव लिए हुए वह जीवन को संवारने और सजाने के लिए इस बार तैयार है, जरूरत है आपको नम्र होने की, विनीत होने की, और पूर्ण समर्पण युक्त होने की।

जितना ही ज्यादा सेवा, साधना, श्रद्धा और समर्पण आप में होगा, उतना ही ज्यादा आप सब कुछ प्राप्त कर सकेंगे, इस बार चूक गये तो सही अर्थों में जीवन से चूक जाओगे।

अहोभाव महोत्सव तो मां के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का पर्व है, कि जब वह सब कुछ प्रदान करे, तब हम उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकें, जब वह सब कुछ प्रदान करे, तब हम दोनों हाथों से प्राप्त कर सकें, जब वह उपस्थित हो, तब हम में पूर्ण श्रद्धा और सम्मान की भावना हो।

हम

ओंकारेश्वर में

साधना का

परचम फहरा कर लौटे हैं!

गुरु पूर्णिमा महोत्सव! साधकों के जीवन का एक सौभाग्यशाली पर्व, और फिर ओंकारेश्वर की धरती, जहां का कण-कण भगवान शंकर की कृपा से प्राणश्चेतनायुक्त है।

५-६-७ जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव के साथ-साथ अद्वितीय साधना शिविर भी रखा था, साधना तो जीवन का आधार और प्राणों की झंकार है, जिसके बिना साधक का शरीर निष्प्राण, निश्चेतनायुक्त है। और पूरे भारतवर्ष के साधक इस साधना में भाग लेने के लिए मचल रहे थे, कि वे साधना में भाग लें, और अपने जीवन को पूर्णता की ओर अग्रसर करें।

ओंकारेश्वर की धरती को देख कर भारतवर्ष के सुदूर प्रान्तों से आये हुए साधक अपनी थकान भुला बैठे, नर्मदा नदी का किनारा, उमड़ती हुई वेगवती धारा और उसके किनारे बसा हुआ ओंकारेश्वर, यों भी सैकड़ों सैकड़ों वर्षों से साधकों और शिव भक्तों का आराध्य स्थल रहा है, यहां के आयोजकों ने भी अपनी तरफ से सभी साधकों की सुविधा के लिए पूरी-पूरी व्यवस्था कर रखी थी, ठहरने का प्रबन्ध "यात्रिका" में किया था, तो भोजन आदि की व्यवस्था "अन्नपूर्णा-भवन" में।

गुरु पूर्णिमा शिविर जीवन का सौभाग्यदायक पर्व है, जिसमें आप सभी साधकों ने प्रसन्नता पूर्वक भाग लिया, और यही आपका सही अर्थों में गुरु के प्रति ऋण चुकाने का उपक्रम है।

५ जुलाई का प्रभात एक अत्यन्त स्वर्णिम चिन्तन ले कर ओंकारेश्वर में अवतरित हुआ, यों भी यह मान्धाता की नगरी है, और नर्मदा के किनारे ऊंचाई पर भगवान ओंकारेश्वर का अद्वितीय मन्दिर है, जो प्राचीन होने के साथ-साथ द्वादश-ज्योतिर्लिंगों में से एक है, इसके ठीक सामने ममलेश्वर का प्राचीन मन्दिर है. दोनों मन्दिरों की बनावट अपने आप में अद्वितीय और भव्य है, कहते हैं, कि ओंकारेश्वर मन्दिर का निर्माण और उसका गुम्बज इस प्रकार से बना है, कि सूर्य की पहली किरण उस गुम्बज के झरोखे से सीधी भगवान ओंकारेश्वर के शिवलिंग पर पड़ती है. छोटे-छोटे ३६५ इन गवाक्षों का निर्माण इस प्रकार किया गया है, कि ३६५ दिनों में प्रत्येक दिन सूर्य की किरण एक नवीन गवाक्ष से भगवान शिव के चरण स्पर्श कर सके ।

इसके साथ ही साथ नर्मदा नदी दक्षिण से उत्तर की ओर विपरीत दिशा में बहती है इसीलिए तो 'विपथगा' कहा गया है, यह भारतवर्ष में एक मात्र ऐसी नदी है, जो उलटी दिशा की ओर बहती है ।

गुरुदेव ने प्रातःकालीन प्रवचन में इन सब तथ्यों को स्पष्ट करने के साथ-साथ बताया, कि यहां कौरव पाण्डवों के द्वारा निर्मित मन्दिर है, — जब वे गुरु द्रोणाचार्य से यहां शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, यहीं पर वेदव्यास ने स्कन्द पुराण की रचना की थी, सब तथ्य साधक सुन रहे थे, और अपने आप में अभिभूत हो रहे थे ।

प्रवचन के बाद साधकों को स्वतन्त्र रूप से विचरण करने के लिए छोड़ दिया गया, जिससे कि वे ओंकारेश्वर की प्रकृति, वातावरण और मन्दिरों को निकटता से देख सकें, इन दिनों नर्मदा में बाढ़ आई हुई थी, और करीब दस फीट से ज्यादा पानी बढ़ गया था ।

अगली शिवरात्रि के अवसर पर सनद कुमार अधिकारी ने नेपाल में भव्य शिविर आयोजन करने का निश्चय किया है, और यह सिद्धाश्रम साधक परिवार के लिए प्रसन्नता की बात है ।

इस बार गुरु पूर्णिमा की साधना में जिन साधकों ने भाग लिया है, और साधना की रसीद प्राप्त की है, वे हमें लौटती डाक से सूचना दें, और रसीद साथ में भेजें, जिससे कि उन्हें नवरात्रि के अवसर पर हजारों साधकों के बीच सावित्र सन्यस्त दीक्षा का नया नामकरण दिया जा सके, और गुरुदेव के हाथों प्रमाण-पत्र प्रदान किया जा सके ।

जिन लोगों ने श्री आफसेट मशीन के लिए धरोहर धनराशि की घोषणा की है, उसका भी श्रेष्ठता के साथ सम्मान नवरात्रि पर्व पर हजारों साधकों के बीच किया जायेगा, जिससे कि बाकी साधक इन महत्वपूर्ण और जबान के पक्के साधकों से प्रेरणा प्राप्त कर सकें ।

गुरु-पूर्णिमा के अवसर पर सभी साधकों ने घोषणा की है, कि वे नवरात्रि के अवसर पर हर हालत में पांच नये लोगों को नवरात्रि शिविर में भाग लेने के लिए प्रेरित करेंगे, और अपने साथ लेते आयेंगे, और हमें विश्वास है, कि उन्हें, इस संकल्प का स्मरण होगा ।

बम्बई के श्री धीरज लाल सेठिया अत्यन्त धार्मिक और उदार हृदय व्यक्तित्व हैं, जिनकी पत्नी भी धार्मिक और शुभ कार्यों में व्यय करती रहती हैं, उनकी उदारता के लिए

सिद्धाश्रम साधक परिवार उन्हें हृदय से आशीर्वाद प्रदान करता है ।

जिन लोगों ने भी आफसेट मशीन के लिए धरोहर धनराशि देने का वायदा किया है, उन्हें चाहिए कि वे हर हालत में ७ अगस्त तक यह धरोहर धनराशि भिजवा दें, यह धनराशि मनी-आर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजें, धनराशि किसी व्यक्ति विशेष के नाम न भेजें, बैंक ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो सकता है, पर वह "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" के नाम से बना हो, तथा जोधपुर में देय हो, मनीआर्डर पर भी आप पता लिखें, "मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१(राज०)"

बम्बई सिद्धाश्रम साधक परिवार ने जो पहले राशि बोली थी, श्री रणजीत चौबे ने उठ कर उस राशि को दुगनी कर दी, यह उसका साहस और हिम्मत ही कहा जा सकता है, एक प्रकार से यह उसकी ईमानदारी और गुरुदेव के सामने अग्नि परीक्षा है, कि वह कितने निश्छल भाव से यह कार्य एक महीने के भीतर-भीतर सम्पन्न कर अपनी श्रेष्ठता का परिचय देते हैं ।

दिल्ली के एक महत्वपूर्ण साधक ने काफी बड़ी धनराशि इस कार्य के लिए प्रदान करने का ऐलान किया है, सारे भारतवर्ष के साधकों की निगाहें इस व्यक्तित्व पर हैं, कि वह अपना वचन निभाता है, या नहीं, पर गुरुदेव को उसके कथन पर पूरा-पूरा भरोसा है ।

शाम के समय सभी साधक उत्साह, उमंग और आनन्द से सराबोर थे, और वे भावनात्मक नृत्य और संगीत में लीन हो गये थे, उनके जीवन का उद्देश्य सर्वप्रथम साधना में पूर्णता प्राप्त करने की रही है, पर कुछ ऐसा भी प्रतीत हुआ कि कुछ साधकों की भावनाएं मर चुकी हैं, या उन पर गहरी सभ्यता और वातावरण ने इतना अधिक विपरीत प्रभाव डाल दिया है, कि साधना की अपेक्षा सैर सपाटे को ज्यादा महत्व देने लगे हैं, यह पूर्व जन्म के दोषों या दुर्भाग्य का लेखा जोखा है, कि वे समर्थ होते हुए भी लाभ नहीं ले पा रहे हैं ।

पर फिर भी सैकड़ों साधकों ने अद्वितीय ब्रह्माण्डेश्वर शिवलिंग को प्राप्त किया, जिसकी पूजा अर्चना अपने आप में अद्वितीय है, जिसकी घर में स्थापना ही मूल्यवान और महत्वपूर्ण हो गई है ।

आज का प्रवचन इसी बात पर केन्द्रित था, कि एक नाली का कीड़ा गंगा तट पर जा कर भी गंगा के निर्मल जल में स्नान करने की अपेक्षा गन्दगी के ढेर को ही ढूंढने का सफल असफल प्रयास करता रहता है ।

दूसरे दिन का प्रातःकाल साधकों के जीवन का सौभाग्यमय दिवस था, नर्मदा के किनारे उन्हें एक अद्भुत और महत्वपूर्ण दीक्षा प्रदान की गई, ऊपर बादलों की घटाएं, पास में नर्मदा नदी बहती हुई, पीछे ओंकारेश्वर का मन्दिर और सामने गुरुदेव सावर्णि [illegible] दीक्षा प्रदान कर रहे थे, और बता रहे थे, कि यहीं पर शंकराचार्य ने अपने गुरु गोविन्द पादाचार्य से दीक्षा प्राप्त कर, एक अद्भुत तेजस्वी व्यक्तित्व बन गये थे ।

दीक्षा के बाद साधकों को छोड़ दिया गया, और ठीक दो बजे शंकराचार्य की गुफा में पूज्य गुरुदेव ने उनके ललाट पर तिलक कर उनको

कुण्डलिनी जाग्रत करने का प्रयास किया, इसके बाद ३ बजे से शाम को ७ बजे तक भगवान ओंकारेश्वर का पूजन अर्चन था, प्रत्येक साधक अपने हाथों में बिल्व-पत्र, पुष्प, जल-पात्र आदि लिये हुए थे, और वे "नमः शिवाय" मन्त्र के उच्चारण के साथ भगवान ओंकारेश्वर के शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढ़ा कर अपने जीवन को धन्य कर रहे थे, प्रत्येक साधक ने उस ज्योतिर्लिंग के भव्य दर्शन किये प्रत्येक साधक ने अपने मन में इच्छा प्रकट की और भगवान सदाशिव ने प्रत्येक साधक की इच्छा पूर्ण की।

७ जुलाई, आज गुरु पूर्णिमा की साधकों को प्रातःकाल से ही गुरु पूजन के लिए उतावली हो रही थी, नर्मदा के किनारे ही पूर्ण शास्त्रोक्त विधि से गुजरात से आये ब्राह्मणों ने पूजन सम्पन्न करवाया और ३ घण्टों के गुरु पूजन में सभी साधकों ने भाग लिया।

बाद में साधकों को जलपान आदि के लिए छोड़ दिया गया, शाम को पत्रिका के हॉल में सभी भारतवर्ष के साधक और शिष्य एकत्र हुए, और सभी साधकों और शिष्यों की मांग थी, कि संस्था तेजी के साथ आगे बढ़े और इसके लिए आफसेट मशीन लगाई जाए।

इस समारोह का सारा प्रबन्ध सनावद के अरुण कुमार, श्री पुरुषोत्तम चौबे तथा महेश चतुर्वेदी ने कुशलता पूर्वक सम्पन्न किया।

बडौदा के श्री प्रवीण जोशी ने हिम्मत कर के अकेले अपने बलबूते पर बड़ी राशि का ऐलान किया है, यह उसकी श्रेष्ठता है, उसने कार्तिक पूर्णिमा को बड़ौदा में जो सहस्त्रकुण्डी महायज्ञ सम्पन्न करने का निश्चय किया है, वह अवश्य ही सम्पन्न करेगा, और यह समारोह, यह महायज्ञ अत्यन्त भव्य होगा, इसका गुरुदेव को पूरा-पूरा भरोसा है।

नेपाल के श्री सनद कुमार अधिकारी ने सिद्धाश्रम साधक परिवार नेपाल की तरफ से जो धरोहर धनराशि प्रदान करने का ऐलान किया है, वह महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने एक जोखिम, एक चुनौती स्वीकार की है. पर गुरुदेव को "अधिकारी" पर विश्वास है, और वह समय पर इस कार्य को सम्पन्न कर लेगा।

साधक वह होता है, जो मुंह से कहे और उसे पूरा कर दे, घटिया इन्सान उसको कहा जाता है, जिसकी जबान का कोई विश्वास नहीं होता, ऐसा व्यक्ति साधक तो क्या, मनुष्य भी नहीं कहला सकता, जो खुद अपनी नजरों से गिर जाता है, यदि सबके सामने कोई घोषणा की है, तो उसे हर हालत में पूरा करना ही मनुष्यता की, श्रेष्ठता की पहिचान है।

आफसेट मशीन के लिए जिन साधकों ने उदारता पूर्वक धनराशि देने का ऐलान किया है, यह उनकी भेंट नहीं अपितु धरोहर धनराशि है, जो कि पत्रिका कार्यालय में बिना ब्याज के, धरोहर धनराशि के रूप में जमा है, आप जब भी चाहें रजिस्टर्ड पत्र से सूचना दे कर दस साल बाद बिना ब्याज के इस धरोहर धनराशि को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

अनन्त चतुर्दशी ४-९-९०

अनन्त सिद्धियों की प्राप्ति सम्भव है

अनंत सिद्धि प्रयोग

से

सृष्टि के मूल रचयिता श्री विष्णु हैं, उन्हीं के स्पन्दन से, प्राण से, मन और इन्द्रियों की उत्पत्ति मानी जाती है, पंच तत्व, ब्रह्मा, रुद्र व सूर्य शक्तियों के जनक विष्णु ही हैं, श्री विष्णु के सम्बन्ध में नारायणोपनिषद में लिखा गया है, कि श्री विष्णु नित्य स्वरूप अनन्त हैं, वे ही ब्रह्मा, वे ही शिव, वे ही काल स्वरूप हैं, वे सब में हैं, और सब उनमें व्याप्त हैं, जहां मनोकामनाएं हैं, पूजन है, क्षमा, संयम, श्रद्धा है, वहीं श्री विष्णु का निवास है।

श्री विष्णु की पत्नी श्री लक्ष्मी हैं, जिसके कारण सृष्टि में विभिन्न प्रकार के चक्र चलते रहते हैं, लक्ष्मी भोग, ऐश्वर्य, सुख-सुविधा की कारक देवी है, और श्री विष्णु की सम्पूर्ण साधना निश्चय ही लक्ष्मी की पूर्ण साधना है।

अनन्त साधना : पूर्णता की साधना

वर्ष के सभी प्रकार के व्रत त्यौहार स्त्री पुरुष दोनों के लिए होते हैं लेकिन अनन्त चतुर्दशी का ऐसा पर्व है, जो कि पुरुषों के लिए अत्यन्त आवश्यक एवं फलदायक माना गया है, साधना में रुचि रखने वाला एवं शास्त्रों को जानने वाला कोई भी साधक इस दिवस को पूजन साधना अवश्य करता है, यही साधना सही रूप में अनन्त की साधना है, अनन्त से तात्पर्य है, कि जिसका कोई अन्त

न हो, अर्थात ऐसे सुखों की कामना, ऐसे ऐश्वर्य की प्राप्ति जिनका जीवन में अन्त ही न हो, यह साधना श्री विष्णु की विधि विधान से इस दिवस पर की गई साधना से साधक निश्चय ही अपने जीवन को उन्नति के ऐसे मार्ग की ओर अग्रसर कर सकता है, जिसका कोई अन्त न हो, इस वर्ष यह महत्वपूर्ण दिवस ४-९-९० भाद्रपद चतुर्दशी मंगलवार को आया है, मैं सभी साधकों को यह सलाह दूंगा, कि इस शुभ अवसर पर अपने मन-वचन-कर्म से साधना अवश्य करें, अपने जीवन को साधना के ऐसे मार्ग पर ले जांय, जिससे जीवन में सुख एवं शान्ति प्राप्त हो सके, साधारण जीवन तो सभी जीते है, इसमें विशेषता ही क्या है, कुछ ऐसा जीवन हो, कि जीवन के प्रत्येक क्षण का आनन्द लिया जा सके, वही जीवन है।

अनन्त देव श्री विष्णु की पत्नी लक्ष्मी को चंचला कहा गया है, और शास्त्रों में यह लिखा गया है, कि लक्ष्मी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती है, परन्तु जो लोग विष्णु की साधना, आराधना नियमित रूप से करते हैं, उनके यहां लक्ष्मी का स्थिर निवास बना रहता है, क्योंकि जहां विष्णु की पूजा आराधना होती है, वहां लक्ष्मी रहती है।

अनन्त साधना : लक्ष्मी साधना

श्री अनन्त पूजन, साधना, अनन्त चतुर्दशी के सम्बन्ध में मन्त्र महार्णव में लिखा गया है, कि इस दिवस पर की गई अनन्त की साधना जो, कि विष्णु की साकार स्वरूप नारायण की साधना है, समस्त साधनाओं में सर्वोपरि है, और यही सभी साधनाओं की जनक भी है, जो भी अनन्त साधना सिद्ध कर लेता है, उसे जीवन में अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है।

विष्णु की साधना जो कि अनन्त की साधना है, सभी प्रकार के देवी देवताओं की साधनाओं का फल देती है, क्योंकि सभी प्रकार के देवी देवता भगवान अनन्त श्री विष्णु ही है, अनन्त साधना से प्रखर तेज प्राप्त कर सूक्ष्म शरीर में शक्ति की वृद्धि होती है, आत्म तेज का विस्तार होता है, जो कि साधक के व्यक्तित्व में वह अनन्त तेजोमयी शक्ति दे देता है, जो कि अकर्मण्यता, तनाव, आसुरी तन्त्र प्रभाव को दूर करता है, अनन्त की साधना में अनंत देव का ध्यान करते हुए लिखा गया है, कि हे देव! समस्त संसार आपका ही स्वरूप है, आप श्रेष्ठ कल्याणकारी एवं मंगलदायक प्रकाशों के आधार हैं, मेरे लिए इस संसार में अत्यधिक सर्वश्रेष्ठ लक्ष्मी प्रदान करें, मेरे जैसे आपके साधकों के समस्त दुःखों का नाश करें।

अनन्त देव ध्यान

उद्यत्प्रद्योतनरुचि तप्तहेमावदातं ।
पार्श्वद्वन्द्व जलधि सुतया विश्वधात्र्या च जुष्टं
नानारत्नोल्लसित-विविधाकल्पमा पीत वस्त्रम्,
अनन्त विष्णु वन्दे दरकमल कौमोदकी चक्रपाणीम् ।

अर्थात उगते हुए सैकड़ों सूर्य के समान, तेजस्वी तपे हुए सोने के समान, जिनके अंग कान्ति प्रकाश है, पृथ्वी एवं लक्ष्मी जिनकी सेवा में हैं, रत्न जड़ित आभूषण एवं चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पद्म शोभित हैं, ऐसे अनन्त विष्णु का मैं ध्यान करता हूं।

साधना क्रम

यह साधना जो कि विशेष अभय एवं अनन्त सुख एवं शक्ति प्रदान करने वाली है, की पूजा साधना अत्यन्त सरल है, प्रत्येक साधक में ईश्वर प्रदत्त महान शक्तियां सन्निहित रहती हैं, व्यक्ति उन्हें समझ नहीं पाता, उसके कर्मों के कारण, दोषों के कारण इन क्षमताओं का विकास नहीं हो पाता, साधना से यह दोष दूर जाता है, और जो साधक विधि-विधान से पूजा करता है, उसे सफलता

अनन्त चतुर्दशी ४-६-९०

अनन्त सिद्धियों की प्राप्ति सम्भव है

अनंत सिद्धि प्रयोग

से

सृष्टि के मूल रचयिता श्री विष्णु हैं, उन्हीं के स्पन्दन से, प्राण से, मन और इन्द्रियों की उत्पत्ति मानी जाती है, पंच तत्व, ब्रह्मा, रुद्र व सूर्य शक्तियों के जनक विष्णु ही हैं, श्री विष्णु के सम्बन्ध में नारायणोपनिषद में लिखा गया है, कि श्री विष्णु नित्य स्वरूप सनातन हैं, वे ही ब्रह्मा, वे ही शिव, वे ही काल स्वरूप हैं, वे सब में हैं, और सब उनमें व्याप्त हैं, जहां मनोकामनाएं हैं, पूजन है, क्षमा, संयम, श्रद्धा है, वहीं श्री विष्णु का निवास है।

श्री विष्णु की पत्नी श्री लक्ष्मी हैं, जिसके कारण सृष्टि में विभिन्न प्रकार के चक्र चलते रहते हैं, लक्ष्मी भोग, ऐश्वर्य, सुख-सुविधा की कारक देवी हैं, और श्री विष्णु की सम्पूर्ण साधना निश्चय ही लक्ष्मी की पूर्ण साधना है।

अनन्त साधना : पूर्णता की साधना

वर्ष के सभी प्रकार के व्रत त्यौहार स्त्री पुरुष दोनों के लिए होते हैं लेकिन अनन्त चतुर्दशी का ऐसा पर्व है, जो कि पुरुषों के लिए अत्यन्त आवश्यक एवं फलदायक माना गया है, साधना में रुचि रखने वाला एवं शास्त्रों को जानने वाला कोई भी साधक इस दिवस को पूजन साधना अवश्य करता है, यही साधना सही रूप में अनन्त की साधना है, अनन्त से तात्पर्य है, कि जिसका कोई अन्त

न हो, अर्थात ऐसे सुखों की कामना, ऐसे ऐश्वर्य की प्राप्ति जिनका जीवन में अन्त ही न हो, यह साधना श्री विष्णु की विधि विधान से इस दिवस पर की गई साधना से साधक निश्चय ही अपने जीवन को उन्नति के ऐसे मार्ग की ओर अग्रसर कर सकता है, जिसका कोई अन्त न हो, इस वर्ष यह महत्वपूर्ण दिवस ४-९-९० भाद्रपद चतुर्दशी मंगलवार को आया है, मैं सभी साधकों को यह सलाह दूंगा, कि इस शुभ अवसर पर अपने मन-वचन-कर्म से साधना अवश्य करें, अपने जीवन को साधना के ऐसे मार्ग पर ले जांय, जिससे जीवन में सुख एवं शान्ति प्राप्त हो सके, साधारण जीवन तो सभी जीते हैं, इसमें विशेषता ही क्या है, कुछ ऐसा जीवन हो, कि जीवन के प्रत्येक क्षण का आनन्द लिया जा सके, वही जीवन है।

अनन्त देव श्री विष्णु की पत्नी लक्ष्मी को चंचला कहा गया है, और शास्त्रों में यह लिखा गया है, कि लक्ष्मी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती है, परन्तु जो लोग विष्णु की साधना, आराधना नियमित रूप से करते हैं, उनके यहां लक्ष्मी का स्थिर निवास बना रहता है, क्योंकि जहां विष्णु की पूजा आराधना होती है, वहीं लक्ष्मी रहती है।

अनन्त साधना : लक्ष्मी साधना

श्री अनन्त पूजन, साधना, अनन्त चतुर्दशी के सम्बन्ध में मन्त्र महार्णव में लिखा गया है, कि इस दिवस पर की गई अनन्त की साधना जो, कि विष्णु की साकार स्वरूप नारायण की साधना है, समस्त साधनाओं में सर्वोपरि है, और यही सभी साधनाओं की जनक भी है, जो भी अनन्त साधना सिद्ध कर लेता है, उसे जीवन में अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है।

विष्णु की साधना जो कि अनन्त की साधना है, सभी प्रकार के देवी देवताओं की साधनाओं का फल देती है, क्योंकि सभी प्रकार के देवी देवता भगवान अनन्त श्री विष्णु ही हैं, अनन्त साधना से प्रखर तेज प्राप्त कर सूक्ष्म शरीर में शक्ति की वृद्धि होती है, आत्म तेज का विस्तार होता है, जो कि साधक के व्यक्तित्व में वह अनन्त तेजोमयी शक्ति दे देता है, जो कि अकर्मण्यता, तनाव, आसुरी तन्त्र प्रभाव को दूर करता है, अनन्त की साधना में अनंत देव का ध्यान करते हुए लिखा गया है, कि हे देव! समस्त संसार आपका ही स्वरूप है, आप श्रेष्ठ कल्याणकारी एवं मंगलदायक प्रकाशों के आधार हैं, मेरे लिए इस संसार में अत्यधिक सर्वश्रेष्ठ लक्ष्मी प्रदान करें, मेरे जैसे आपके साधकों के समस्त दुःखों का नाश करें।

अनन्त देव ध्यान

उद्यत्प्रद्योतनरुचि तप्तहेमावदातं ।
पार्श्वद्वन्द्वे जलधि सुतया विश्वधात्र्या च जुष्टं
नानारत्नोल्लसित-विविधाकल्पमा पीत वस्त्रम्,
अनन्त विष्णु वन्दे दरकमल कौमोदकी चक्रपाणीम् ।।

अर्थात उगते हुए सैकड़ों सूर्य के समान, तेजस्वी तपे हुए सोने के समान, जिनके अंग कांति प्रकाश है, पृथ्वी एवं लक्ष्मी जिनकी सेवा में है, रत्न जड़ित आभूषण एवं चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पद्म शोभित है, ऐसे अनन्त विष्णु का मैं ध्यान करता हूं।

साधना क्रम

यह साधना जो कि विशेष अभय एवं अनन्त सुख एवं शक्ति प्रदान करने वाली है, की पूजा साधना अत्यन्त सरल है, प्रत्येक साधक में ईश्वर प्रदत्त महान शक्तियां सन्निहित रहती हैं, व्यक्ति उन्हें समझ नहीं पाता, उसके कर्मों के कारण, दोषों के कारण इन क्षमताओं का विकास नहीं हो पाता, साधना से यह दोष दूर जाता है, और जो साधक विधि-विधान से पूजा करता है, उसे सफलता

अवश्य ही प्राप्त होती है, निराशा उस साधक के जीवन में नहीं रहती है, उमंग उत्साह हर समय बना रहता है, क्योंकि उसे साधना की सिद्धि प्राप्त होती रहती है।

इस साधना में कुछ विशेष सामग्री अत्यन्त आवश्यक रहती है, इनमें मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त श्री विष्णु अनन्त यन्त्र, १०८ कमल बीज तथा ग्यारह नाभि चक्र अत्यन्त आवश्यक है, इसके अलावा जल पात्र, कुंकुम, केसर, अगरबत्ती, धूप, दूध, नैवेद्य, मौली भी आवश्यक है, इस साधना में श्वेत आसन तथा सामने सामग्री हेतु आवश्यक आसन भी श्वेत ही होना चाहिए।

साधना विधि

साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर मुंह कर अपने पूजा स्थान में बैठे, अनन्त साधना के लिए प्रातः ९ बजे से पहले का समय अत्यन्त उचित कहा गया है, अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर चावलों की ढेरी पर यज्ञोपवीत रख कर उस पर श्री विष्णु अनन्त यन्त्र स्थापित करें, अपने सामने विष्णु यन्त्र के आगे ग्यारह नाभि चक्र स्थापित कर दें, ग्यारह नाभि चक्र श्री अनन्त विष्णु के ग्यारह शक्तियों के प्रतीक हैं, जिन्हें साधक पूर्ण रूप से सिद्ध करना चाहता है।

सर्वं प्रथम अपने गुरु का स्मरण कर गुरु-चित्र यन्त्र यदि हो तो गुरु मन्त्र से पूजन और इस विशेष साधना में सफलता हेतु आशीर्वाद की इच्छा करें, तत्पश्चात गणपति पूजन करें, यदि गणपति की मूर्ति अथवा चित्र नहीं है, तो लकड़ी के बाजोट पर ही मौली लपेट कर एक बड़ी सुपारी स्थापित करें, और उस पर कुंकुम, गुलाल आदि लगा कर दूब, अक्षत तथा पुष्प अर्पित करें, गणपति की स्थापना का प्रत्येक पूजा में महत्व है।

इसके पश्चात मूल साधना प्रारम्भ होती है, सर्वप्रथम साधक संकल्प दांये हाथ में जल ले कर अवश्य करें, इस संकल्प का विशेष महत्व है, संकल्प में साधक यह कामना करे, कि मैं इस नियत तिथि भारतवर्ष के सभी देवी देवताओं का, नवग्रहों का ध्यान कर इस साधना को करने का संकल्प लेता हूं, मेरे सभी सहायक हों, और मुझे साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हो, अनन्त भगवान श्री विष्णु का नाभि से कमल पुष्प प्रकट हुआ, और उसी से ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है, जिन्होंने सारे विश्व की संरचना की, अतः इस साधना में कमल बीज का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है, जहां तक श्री विष्णु के बीज मन्त्रों का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में कई सौ मन्त्र शास्त्रों में दिये गये हैं, लेकिन अनन्त सुखों की कामना करने वाले साधक के लिए एक ही बीज मन्त्र फलकारक है, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि साधना पूर्ण श्रद्धा भाव से, शुद्ध मन से एवं जो भी कार्य कर रहे हैं, उसके प्रति पूर्ण समर्पण से होनी चाहिए, साधना की सामग्री पूर्ण रूप से पास में होनी चाहिए।

श्री अनन्त विष्णु बीज मन्त्र

॥ ॐ श्रीं अनन्ताय नमः ॥

यह बीज मन्त्र अत्यन्त सरल होते हुए भी विशेष शक्ति युक्त है, विष्णु की विधि-विधान से पूजा कर यदि साधक नियमित रूप से इस बीज मन्त्र का जप करें, तो उसे निश्चित रूप से सुखों की प्राप्ति होती है, उसे केवल भौतिक सुख ही नहीं, अपितु आध्यात्मिक दृष्टि से भी मानसिक स्तर अत्यन्त उच्च हो जाता है, जो साधक कुण्डलिनी जागरण की दिशा में साधना कर रहे हैं, उन्हें भी इस बीज मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए, क्योंकि अनन्त श्री विष्णु ही अनन्त शक्तियों के स्रोत हैं।

अनन्त सिद्धि प्रयोग

सर्व प्रथम साधक तांबे के पात्र में जल ले कर अपने दाहिने हाथ से जल का छिड़काव थोड़ा अपने शरीर पर अपने आसन पर तथा चारों दिशाओं की ओर करें, इसके पश्चात शुद्ध घी का दीपक जला दें, दूसरी ओर सुगन्धित अगरबत्ती जलाये, वातावरण में तथा मन में भी मधुरता आनन्द का भाव अवश्य ही होना चाहिए, जैसा कि ऊपर लिखा गया है, कि गुरु पूजन, गणेश पूजन के पश्चात संकल्प कर अपने दाहिने हाथ से एक सुपारी श्री अनन्त विष्णु यन्त्र के सामने रखे हुए प्रथम नाभि चक्र पर अर्पित करें, और एक पुष्प चढ़ाए साथ ही पांच बार बीज मन्त्र का जप करें, यही क्रम ग्यारह नाभि चक्रों के साथ दोहराना है, इससे ग्यारह ही शक्तियां स्थिर हो कर अपना स्थान ग्रहण कर लेती है, और साधक के अभीष्ट कार्यों में सहायक होती है।

इस पूजन में साधक पालथी मार कर ही पूजा करें, अथवा पद्मासन पर बैठ कर पूजा करें, तो अत्यन्त श्रेष्ठ है, अब साधक एक पात्र में १०८ कमल बीज जो कि पहले से ही रख लेने चाहिए, प्रत्येक कमल बीज एक बीज मन्त्र का जप करने के पश्चात अपने सिर के ऊपर फेरे, तथा श्री अनन्त यन्त्र के सामने अर्पित कर दें, यह क्रम एक पूरी माला अर्थात १०८ बार होना चाहिए, यह प्रयोग अत्यन्त ही सफल प्रयोग है, इस प्रयोग से आपको जो अनन्त की शक्ति प्राप्त होती है वह स्वयं अनुभव कर सकते है, पूरे साधना काल में साधक को अपने मन के के भावों पर नियन्त्रण पूर्ण रूप से रखना चाहिए।

इस पूजन के पश्चात साधक माला से बीज मन्त्र को उसी स्थान पर बैठे-बैठे ग्यारह मालाओं का और जप अवश्य करें, उसके पश्चात ही स्थान छोड़े, मन्त्र जप की पूर्णता के पश्चात भगवान श्री अनन्त को अपने सभी पूजा समर्पित करते हुए, श्री विष्णु आरती अपने पूरे परिवार सहित करें।

जहां तक व्रत का प्रश्न है, इस विशेष दिवस पर साधक निराहार अवश्य रहे, केवल फल अथवा दूध ही ग्रहण करें।

इच्छित कामना पूर्ति प्रयोग

अनन्त चतुर्दशी के दिन ऊपर दिये गये पूरे साधना क्रम को निभाते हुए यदि साधक श्वेत पुष्प में लपेट कर १०८ कमल बीज अर्पित करते हुए निम्न लिखित बीज मन्त्र का जप करें, तो उसकी कोई विशिष्ट अपूर्ण इच्छा अवश्य ही पूर्ण होती है —

॥ ॐ क्लीं ऋषिकेशाय नमः ॥

इस मन्त्र में क्लीं शब्द का अत्यधिक महत्व है, यह प्रयोग २१ दिन तक सम्पन्न करना चाहिए।

इस साधना में अपने सामने एक पात्र में शुद्ध घी और उसमें काली मिर्च रखें, तथा "ॐ नारायणाय नमः" मन्त्र की ११ मालाएं जप करने के पश्चात शुद्ध घी को ग्रहण करें, साधक को वचन सिद्धि, बुद्धि वृद्धि प्राप्त होती है, इस मन्त्र का जप तो प्रत्येक साधक को जब भी समय मिले अवश्य ही करना चाहिए।

श्राद्ध दिवस ६-९-९०

पूर्वजों और पितरों का

ऋण चुकाना

जीवन का आवश्यक धर्म है

और वह ऋण

इस साधना से चुकाया जा सकता है

यह तो पूर्ण सत्य सिद्ध हो चुका है, कि मृत्यु ही जीवन का अन्त नहीं है, उसके पश्चात भी एक ऐसा जीवन है, जो कि इस भौतिक जीवन से अधिक शक्तिशाली, प्रभावकारी एवं सामान्य नियन्त्रण से परे है, भौतिक जीवन में जो रुकावटें तथा गतिविधियों पर नियन्त्रण रहता है, वह दूर हो जाता है, एवं प्रत्येक प्राणी शक्ति-पुंज बन जाता है।

हमारा सम्पूर्ण जीवन शक्तियों द्वारा ही चलायमान है, लेकिन इन शक्तियों पर नियन्त्रण नहीं है, जिसके कारण जिस प्रकार का जीवन साधारण व्यक्ति जीना चाहता है, वैसा जीवन जीना उसके लिए सम्भव नहीं हो पाता है, बहुत अधिक धन होने पर भी व्यक्ति सुखी नहीं कहा जा सकता है, उसे कई दृष्टियों से समस्याओं का सामना करना पड़ता है, चाहे वह मानसिक पीड़ा हो, भय संबंधी पीड़ा हो, अथवा कोई और। क्या यह सम्भव नहीं है, कि जिस प्रकार हम वाहन चलाते हैं, और उसका नियन्त्रण हमारे वश में रहता है, उसी प्रकार हमारे जीवन का नियन्त्रण भी हमारे वश में हो, हम जिस प्रकार चाहें उस प्रकार उसे मोड़ दे सकें, इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है, कि हम यह पहिचान लें, कि कौन हमें सहयोग प्रदान कर सकता है, किसकी शक्ति हमें प्राप्त हो

सकती है, यदि कोई शत्रु बाधा पहुंचाने का प्रयास कर रहा है, तो उस पर रोक कैसे लगाई जाए।

जहां तक सहयोग एवं दिशा प्रदायक का सम्बन्ध है, सभी शास्त्रों में सबसे बड़ा सहयोगी मार्गदर्शक गुरु को ही कहा गया है, गुरु द्वारा शिष्य को सदैव उसकी उन्नति का ही मार्ग प्राप्त होता है, गुरु के शरण में आ कर तथा शुद्ध मन से की गई कोई भी गुरु-भक्ति निष्फल नहीं हो सकती।

गुरु के पश्चात सबसे बड़ा सहयोगी परिवार है, और परिवार में भी जो पूर्वज हैं, उनका स्थान उच्च है, जीवित रहते हुए आपस में कई बार मत-भेद, मतभेद एवं विरोधाभास हो सकता है, लेकिन मृत्यु के पश्चात वह सब सांसारिक स्थितियां समाप्त हो जाती हैं, जिस प्रकार एक पिता सदैव यही चाहता है, कि उसका पुत्र उससे अधिक योग्य बने, उसी प्रकार हमारे पूर्वज यही चाहते हैं, कि उनकी संतान अपने जीवन में सम्पूर्ण रूप से सुखी हो।

गीता में लिखा गया है, कि व्यक्ति शरीर का अन्त कर देने से ही समाप्त नहीं होता है, वह तो नये वस्त्र धारण करने की प्रक्रिया सम्पन्न कर देता है, स्थूल शरीर का त्याग कर सूक्ष्म शरीर धारण कर लेता है, विभिन्न शास्त्रों का कथन है, कि जीवन, मृत्यु के उपरान्त भी अपने कुटुम्बियों के आस-पास मंडराता रहता है, क्योंकि उसे उनसे मोह रहता है, वह जीवन तो अपने सूक्ष्म शरीर से सबको देख सकता है, लेकिन उसे कोई देख नहीं सकता, यदि उसे उचित भावना एवं पूजा, आवाहन प्राप्त नहीं होता है, तो अत्यन्त निराश हो जाता है, यदि पितरों को श्रद्धा पूर्वक पूजा, ध्यान एवं आवाहन किया जाय, तो वे उसके प्रत्येक कार्य में ऐसे सहयोगी बनते हैं, कि चिन्ताएं एवं समस्याएं उनके जीवन से दूर ही हो जाती हैं, इसीलिए जो विधि पूर्वक पूजा, यज्ञ करते हैं, वे पूजन कार्य से पहले अपने पितरेश्वरों का ध्यान करते हैं, उनका आह्वान करते हैं।

यजुर्वेद में कहा गया है, कि पितरों का आह्वान करते समय उन्हें पूर्ण निमन्त्रण दें, अपने जीवन के सभी कार्यों में भागी बनावें, तथा अपने आयु, यश, उन्नति में वृद्धि हेतु कामना करें।

पितरेश्वरों की शक्ति

पितरेश्वरों की शक्ति सूक्ष्म शरीर होने के कारण अत्यन्त विशाल बन जाती है, वे शक्ति एवं सिद्धि के निश्चित स्वरूप बन जाते हैं, उत्तम होने के कारण स्वास्थ्य, वायु, गर्भ आदि कार्यों के नियन्त्रक बन जाते हैं, वे अपनी शक्ति से आने वाली घटनाओं को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, यदि उनकी पूर्ण कृपा रहती है, तो वे अपनी संतानों को ऐसा मार्ग दिखा सकते हैं, जिसमें कम से कम बाधाएं हों, ऐसा कार्य करने को प्रवृत्त कर सकते हैं, जिससे सम्पूर्ण उन्नति हो, व्यक्तित्व में तेज उत्पन्न कर सकते हैं, जीवन में रस, माधुर्य एवं सौन्दर्य घोल सकते हैं, उनके लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं रहता है, आवश्यकता केवल इस बात कि है, कि वे पूर्ण रूप से प्रसन्न हों, और उनकी पूजा, साधना, ध्यान नियमित रूप से की जाय।

पितरेश्वर साधना

धर्म, साधना एवं शास्त्रों में रुचि रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कोई भी श्रेष्ठ शुभ कार्य प्रारम्भ करने से पहले अपने पूर्वज पितरेश्वरों का ध्यान अवश्य करता है, लेकिन वह स्थिति ही पूर्ण नहीं है, उन्हें पूर्ण रूप से अपने अनुकूल बना कर प्रत्येक कार्य में सहयोग प्राप्त करने हेतु विशेष साधना की आवश्यकता रहती है, शास्त्रों के अनुसार श्राद्ध दिवसों को शुभ कार्यों के अनुकूल नहीं माना जाता है, इस समय वायु की गति एक विशेष प्रकार की रहती है, आकाश में तारा-मण्डलों का एक विशेष समूह बनता है, और यह सिद्ध हो चुका है, कि इस समय पूर्वज पितरेश्वर सूक्ष्म शरीर से इस पृथ्वी लोक पर अपनी पूर्ण गति से विचरण करते हैं, यदि इस समय कोई साधक

पूर्ण विधि-विधान सहित पितरेश्वर साधना करे, तो उसे अन्य समय की अपेक्षा अधिक सरलता से पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है, इस वर्ष श्राद्ध आश्विन कृष्ण प्रथमा दिनांक ८-९-९० से प्रारम्भ हो रहा है, तथा १८-९-९० को पूर्ण होगा, ये १२ दिन इस विशेष साधना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

साधना क्यों करें

इस विशेष साधना में सबसे बड़ा माध्यम भावना है, अपनी समस्त इच्छाओं, कर्तव्यों को भावना के रूप में प्रकट कर देने से पितरेश्वर अत्यधिक प्रसन्न होते हैं, उनके प्रति पूर्ण रूप से सम्मान देते हुए, सहयोग की कामना ही इस साधना का विशेष लक्ष्य है. जहां व्यक्ति नहीं पहुंच सकता है, वहां भावना पहुंच सकती है, और जहां भावना होती है, और उसके पीछे शुद्ध हृदय से किया कर्म होता है, वही सफलता एवं सिद्धि है. शुद्ध भावना के कारण ही अधिक से अधिक सहयोगी बन पाते हैं।

यह सत्य है, कि पितरेश्वरों के कारण ही वर्तमान शरीर अस्तित्व में आया है, पालन-पोषण और विकास हुआ है, जीवन को बनाने में उनका सहयोग प्राप्त हुआ है, उनके प्रति भक्ति नहीं प्रकट करने का यही अभिप्राय होगा, कि व्यक्ति अपने अस्तित्व को ही नकार रहा है, उनके प्रति उपकार भावना निरन्तर प्रगट करना है, उनकी साधना करना हर दृष्टि से आवश्यक है, और यही तर्पण कहा जाता है।

साधना विधि

यह साधना श्राद्ध दिवसों में की जाने वाली साधना है, इसमें प्रथम दिवस का विशेष महत्व है, प्रथम दिवस से पितरेश्वरों का आह्वान कर उन्हें स्थापित किया जाता है, और प्रतिदिन निश्चित संख्या में मन्त्र जप एवं पूजन कर सिद्ध किया जाता है, जिससे कि वे साधक के वशीभूत हो कर उसे अपने संरक्षण में ले लेते हैं।

इस साधना में कुछ विशेष प्रकार की सामग्री की आवश्यकता रहती है, जिनके बिना यह साधना पूर्ण नहीं हो सकती है, इस सामग्री **"पांच सोमेश्वर रुद्राक्ष"** **"११ लघु नारियल"** ताम्र पत्र, चावल, तिल, केसर, श्वेत वस्त्र, दूध, घी, शहद, चांदी का बना सर्प, तुलसी पत्र आवश्यक है।

श्राद्ध के प्रथम दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें, यह साधना सूर्योदय के साथ ही प्रारम्भ कर देनी चाहिए, इस हेतु आवश्यक है, कि प्रातः अत्यन्त जल्दी उठ कर सभी सामग्री की व्यवस्था एवं स्नान वगैरह कर अपने पूजा स्थान को शुद्ध कर साधना क्रम के अनुसार सामग्री रख दें।

अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछा कर पांच सोमेश्वर रुद्राक्ष स्थापित करें, काले रंग से प्रत्येक सोमेश्वर रुद्राक्ष के चारों ओर एक घेरा बना दें, उसके पश्चात इन पांचों रुद्राक्षों के आगे क्रम वार चावलों की ढेरी पर ग्यारह लघु नारियल स्थापित करें, एक ओर घी का दीपक अवश्य जला दें, अपने आसन के नीचे छोटा चांदी का सर्प स्थापित कर दें, जिससे कि किसी भी प्रकार के भूत-पिशाच आदि आपको हानि नहीं पहुंचा सकें, अपने सामने जहां आपने पांच त्रिदिशा वाले सोमेश्वर रुद्राक्ष स्थापित किये हैं, उन्हें सिन्दूर अवश्य चढ़ाएं तथा ये रुद्राक्ष काले तिलों की ढेरी पर स्थापित करने चाहिए।

अब पूजा स्थान से बाहर आकर तांबे के पात्र में जल ले कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर जल की अंजली दें, तथा पितरेश्वरों के आवागमन हेतु प्रार्थना करें, इसके

साथ ही प्रत्येक अञ्जली के साथ निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें —

ॐ लं नम:

ॐ वं नम:

ॐ रं नम:

ॐ यं नम:

इसके पश्चात बिना किसी और देखे, सीधे पूजा स्थान में अपना आसन ग्रहण करें तथा निम्न ध्यान मन्त्र का पांच बार जप करें, प्रथम बार जप करते हुए, पहले सोमेश्वर रुद्राक्ष को घी मिला कर तिल अर्पित करें तथा क्रिया क्रम पांच बार दोहराएं —

स्वशरीरं तेजोमयं पुण्यात्मकं पुरुषार्थसाधनं पितरेश्वराराधनयोग्यं ध्यात्वा तस्मिन् शरीर: सर्वात्मकं सर्वज्ञं सर्वशक्तिसमन्वितं पितरेश्वरामयं आनन्द स्वरूपं भावयेत् ।।

इस प्रकार शुद्ध मन से किये गये इस ध्यान से पितरेश्वर अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं, अपनी भावनाओं को पूर्ण रूप से प्रगट करते हुए उनसे हर दृष्टि से सहयोग प्राप्ति की इच्छा प्रगट करें, इसमें किसी प्रकार का कोई संकोच नहीं होना चाहिए, क्योंकि ये पितरेश्वर आपके अपने हैं, इसके पश्चात सामने रखे हुए लघु नारियलों का चारों ओर इस प्रकार अर्द्ध चन्द्राकार घेरा बना दें, और प्रत्येक लघु नारियल पर केसर, पुष्प, घी, चावल, तुलसी पत्र अर्पित करें, यह लघु नारियल प्रयोग इस साधना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यह अर्द्ध चन्द्राकार स्थिति लक्ष्मण रेखा है, जो कि पितरेश्वरों को स्थायी रूप आपके यहां स्थापित कर देती है ।

इसके पश्चात रुद्राक्ष माला से पितरेश्वर बीज मं का जप करें, इस साधना में जो माला प्रयोग में लाई जा वह किसी दूसरी साधना में प्रयोग नहीं की जा सकती है इस बात का ध्यान रखना विशेष आवश्यक है ।

बीज मन्त्र

।। ॐ सर्व पितृ प्रं प्रसन्नो भव ॐ ।।

यह प्रभावकारी बीज मन्त्र परम विस्फोटक शक्ति लिए हुए है, और इसकी पांच मालाएं उसी स्थान पर बैठे-बैठे जप करें ।

इस प्रकार प्रत्येक दिन पूजा विधान में बीज मन्त्र की पांच माला का जप करना ही है, जब श्राद्ध दिवस पूर्ण हो जाएं, तो ये सभी सामग्री काले वस्त्र में बांध कर किसी जल धारा में, या तालाब में अर्पित कर दें ।

यह प्रयोग अत्यन्त सिद्ध प्रयोग है, और इसके कारण आपको जीवन में अपने पूर्वजों का ऐसा मार्गदर्शन, सहयोग एवं शक्ति प्राप्ति हो जाती है, जिनके कारण आपका जीवन एवं व्यक्तित्व शक्तिमान हो जाता है, श्राद्ध दिवसों में अपने पितरेश्वरों के प्रति श्रद्धा भक्ति प्रकट करने हेतु प्रत्येक साधक को यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए ।



अब मनोकामनाएं

अवश्य पूर्ण हो सकेंगी—

कुछ सरल सर्वोत्तम साधनाओं से

व्यक्ति का जीवन इच्छाओं एवं मनोकामनाओं से परि-पूर्ण रहता है, और प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसकी सभी इच्छाएं पूर्ण हो जाएं, लेकिन जीवन में निरन्तर बाधाएं आती रहती हैं, उसे हर पल संघर्ष करना पड़ता है।

कर्तव्य के साथ-साथ मन्त्र-तन्त्र ऐसा माध्यम है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है।

कुछ विशेष साधनाएं आगे के पत्रों में स्पष्ट की जा रही हैं, जो कि निश्चय ही पत्रिका के प्रत्येक पाठक के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

जहां जीवन संघर्षशील है, वहीं मनुष्य भी अपनी इच्छाएं एवं मनोकामनाएं बढ़ाता रहता है, और सही मायने में देखा जाय, तो यही उसका कर्तव्य भी है, एक स्थान पर स्थिर हो कर संतुष्ट हो जाना योग्य पुरुष का लक्षण नहीं है, बाधाओं को पूरा कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करना तथा एक लक्ष्य प्राप्त हो जाने पर दूसरे लक्ष्य की ओर अपनी शक्ति एवं श्रम को लगा देना ही सही कर्तव्य है।

अपनी शक्ति एवं अपनी कार्यक्षमता के अनुरूप लक्ष्य निर्धारित कर इच्छाओं की पूर्ति सम्भव है, लेकिन कई बार निरन्तर विपरीत बाधाओं के कारण कुछ सामान्य

इच्छाएं भी पूर्ण नहीं हो पाती हैं, और व्यक्ति का जीवन निराशा से भर जाता है।

जीवन में उन्नति के लिए निराशा का कोई स्थान नहीं है, यदि एक मार्ग बन्द हो जाय तो दूसरे मार्ग की ओर प्रस्थान करें, अपने कर्तव्य के साथ-साथ कुछ ऐसी साधना शक्तियों का सहयोग लें, जो कि आपके कार्यपूर्ति में सिद्धि-कारक हों, मन्त्र तथा तन्त्र आपको अपने मूल मार्ग से हटाते नहीं हैं, अपितु उनका सहयोग आपको ऐसी प्रेरणा देते हैं, और ऐसी शक्ति देते हैं, कि आपकी बाधाएं अपने आप ही दूर होने लगती हैं।

तन्त्र साधनाओं के सम्बन्ध में ऐसी धारणा व्याप्त है, कि साधना शुद्ध रूप से न हो सकी, तो उनका प्रभाव कहीं विपरीत न पड़ जाय, लाभ के स्थान पर हानि न हो जाय, कुछ विशेष साधनाओं में इस प्रकार का विचार निश्चय ही आवश्यक है, आगे के पृष्ठों में कुछ ऐसी सरल एवं श्रेष्ठ साधनाएं दी जा रही हैं, जिन्हें सामान्य साधक अथवा साधिका सम्पन्न कर सकते हैं, और इन साधनाओं के सदैव उचित फल प्राप्त हुए हैं, बाधाओं के निराकरण से जीवन में उमंग एवं उत्साह आता है, अतः जो साधक मन्त्र तन्त्र-यन्त्र में थोड़ी भी रुचि रखते हैं, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए, सामान्य जीवन तो सभी जीते हैं, कुछ ऐसा जीवन जिया जाय, जिसमें जीवन के प्रत्येक पल का आनन्द हो।

१- व्यापार उन्नति साधना

जो व्यक्ति व्यापार में लगा रहता है, उसे हर पल चिन्ता अवश्य बनी रहती है, कभी राजकीय बाधा, तो कभी कम बिक्री, तो कभी शत्रु द्वारा विरुद्ध प्रयोग, जिनके कारण या तो व्यापार में उन्नति नहीं हो पाती या घाटा पड़ने लगता है।

इस साधना में साधक ताम्र पत्र अंकित "लक्ष्मी यन्त्र" अपने घर में अथवा दुकान में स्थापित कर दें तथा "स्फटिक माला" से नीचे दिये गये विशेष मन्त्र का जप करें, प्रति दिन कम से कम तीन माला इस मन्त्र का जप अवश्य करें, यह जप कार्य अपने-अपने व्यापार स्थल, अपने कार्य स्थल पर जाने से पहले सम्पन्न करना चाहिए, मन्त्र जप पूर्ण कर साधक इस माला को अपने गले में धारण कर ले, "लक्ष्मी यन्त्र" स्थायी रूप से उसी स्थान पर रहे, रात को सोते समय यह माला उतार दें, तथा दूसरे दिन पुनः धारण कर लें, वैसे तो यह प्रयोग चालीस दिन का है, परन्तु साधक अपनी इच्छा से इसे आगे भी निरन्तर कर सकता है, जो उसके लिए और अधिक फलकारक ही रहता है।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं लक्ष्मी मम गृहे
निवासय निवासय व्यापारे धन पूरय
पूरय चिन्ताम् दूरय दूरय नमः ॥

वास्तव में यह मन्त्र अत्यन्त सफलता कारक है, और इसके यदि कोई विरोधी आपके व्यापार पर तन्त्र प्रभाव किये हुए है, तो वह भी दूर होता है।

२- मनोकामना-सिद्धि साधना

जहां तक मनोकामनाएं पूर्ण होने का प्रश्न है, साधक को अपनी शक्ति, सामर्थ्य एवं स्थिति के अनुसार ही मनोकामनाएं रखनी चाहिए, इस साधना में मन्त्र जप का विधान कुछ विशेष प्रकार का है तथा यह साधना यदि बुधवार को प्रारम्भ की जाय तो ज्यादा उचित रहता है, साधना दिवस के दिन साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने "देवी का चित्र" "शक्ति चक्र" स्थापित करें, यदि साधक अपनी मनोकामनाओं

की पूर्ति हेतु "मनोकामना पूर्ति ताबीज" स्थापित करें तो उसके लिए और भी अधिक उपयुक्त है, इस साधना में लाल वस्त्र तथा लाल आसन और लाल पुष्पों का ही महत्व है, सर्वप्रथम देवी के सम्मुख लाल पुष्प समर्पित कर पश्चिम की तरफ मुंह कर नित्य प्रति निम्न मन्त्र की दस मालाओं का जप करें।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं मानस सिद्धिकरी ह्रीं नमः ॥

जब दस माला मन्त्र जप हो जाय तो एक लाल पुष्प देवी को अर्पित कर दें, ताबीज को कुंकुम लगाएं और शान्त हृदय से अपनी मनोकामना व्यक्त करें, इस साधना में केवल मन्त्र सिद्ध "मूंगा माला" का ही प्रयोग विशिष्ट अवसरों पर ही करें।

यह साधना सात दिवस की है, सात दिवस के पश्चात अगले बुधवार को साधक ताबीज धारण कर लें, यदि उसकी मनोकामना समय पर पूर्ण हो जाती है, तो दूसरी मनोकामना के लिए थोड़े समय उपरान्त यही साधना पुनः सम्पन्न करें।

मुकदमे में विजय हेतु साधना

यह साधना मंगलवार को प्रारम्भ करनी चाहिए, तथा किसी विशेष शत्रु पर विजय प्राप्त करने हेतु ही इस साधना का प्रयोग करें, इस साधना में लाल वस्त्र, लाल आसन आवश्यक है।

किसी भी मंगलवार को अपने सामने सफेद कागज पर लाल कलम से अपने शत्रु का नाम लिख दें, तथा उसे विशेष मन्त्र सिद्ध "विजय ताबीज" लपेट दें, एक तांबे के पात्र में थोड़ा तेल, सरसों, तिल तथा वे ताबीज रख दें और नीचे दिये गये मंत्र का जप करें, इस मंत्र जप में विशेष बात यह है कि उसका जप केवल "मूंगा माला" से ही किया जा सकता है।

मन्त्र

॥ ॐ क्लीं मम शत्रुन् (अमुकस्य)
पराजय क्लीं फट् ॥

इस मन्त्र में अमुक के स्थान पर अपने शत्रु का नाम लें और यदि शत्रुओं का समूह हो तो जो प्रमुख शत्रु हो उसका नाम लिखें। वैसे तो यह साधना ४० दिन की है लेकिन मंत्र जप अधिक संख्या में एवं पूर्ण विश्वास के साथ करने से जल्दी ही सफलता प्राप्त होती है, जब साधना पूर्ण हो जाय तब सामने पात्र में रखा हुआ ताबीज, कागज, तिल, सरसों इत्यादि सामग्री कहीं जंगल में अथवा एकान्त स्थान में जा कर गाड़ दें, इससे निश्चय ही शत्रु की शक्ति क्षीण होती है और आपका पराक्रम बढ़ता है

किसी गलत कार्य के लिए इस मन्त्र का दुरुपयोग न करें तो ज्यादा उचित रहता है।

नौकरी प्राप्ति हेतु मुसलमानी मंत्र साधना

यह साधना मुझे एक सूफी संत ने बताई है, और कई साधकों ने इसका प्रयोग किया है, जहां तक प्रभाव का प्रश्न है इस साधना के पश्चात जिसने भी प्रयोग सम्पन्न किया उसके लिए कुछ ऐसी स्थिति अवश्य बनी है जिससे या तो उसकी कोई नौकरी लग गई या उसका स्वयं का

व्यापार कार्य प्रारम्भ हो गया ।

इस साधना में कुछ विशेष सामग्री, जौ या उड़द का आटा, "रोजगार ताबीज" जो कि मंत्र सिद्ध हो, आवश्यक है । सवा पाव आटे को लेकर उसकी रोटी बना कर उसे एक तरफ सेंकें और दूसरी तरफ कच्ची रखनी चाहिए ।

इस प्रकार इस रोटी के चालीस टुकड़े करें, और प्रत्येक टुकड़े पर नीचे लिखे गए मन्त्र का ११ बार जप "स्फटिक माला" से करें, यह प्रयोग सभी टुकड़ों पर एक-एक कर सम्पन्न करना आवश्यक है, इसके पश्चात इन टुकड़ों को या तो मछलियों को खिला दें, अथवा चींटियों को खिला दें, तथा ताबीज स्वयं धारण कर लें, यह प्रयोग जब तक सफलता प्राप्त न हो तब तक करते रहना चाहिए, इस साधना में स्फटिक माला का ही प्रयोग किया जाता है ।

मन्त्र

॥ या इज़ाफील या बहुक्क या अल्ला हो ॥

जब साधना पूर्ण हो जाय तो साधक इस साधना के ...र को नमस्कार करें, इस साधना में जप के समय मुंह ...शिए दिशा की ओर होना चाहिए ।

वशीकरण प्रयोग

तन्त्र शास्त्रों के अनुसार वशीकरण आदि से सम्बन्धित प्रयोग तथा साधना साधक को बहुत कम सम्पन्न करनी चाहिए, तथा इस साधना के पीछे निश्चय ही उद्देश्य शुद्ध होना चाहिए, इस साधना में "वशीकरण बीज" जल पात्र, शहद, ताम्र पात्र, शुद्ध जल, कुम आदि सामग्री की आवश्यकता रहती है, यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ की जा सकती है ।

शुक्रवार की रात्रि को स्नान कर सुन्दर वस्त्र धारण कर, भोज पत्र पर जिस व्यक्ति को अपने वश में करना चाहते हैं, उसका नाम लिख दें, और इस भोज पत्र को "वशीकरण ताबीज" लपेट कर ताम्र पात्र में रख दें, और उसमें शहद, जल व थोड़ा सा इत्र अवश्य डाल दें, इसके पश्चात प्रतिदिन ११ माला नीचे लिखे मन्त्र का जप करें

मन्त्र

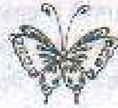
॥ ॐ नमो आदि पुरुषाय अक्षाय अमुकस्य आकर्षणम् कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मन्त्र में 'अमुक' के स्थान पर, जिसे वशीकरण करना है, उसका नाम उच्चरित करें, प्रतिदिन ११ माला फेरते हुए ४० दिन तक यह साधना करें, प्रतिदिन मन्त्र जप के पश्चात साधना पात्र के ऊपर ढक्कन अवश्य लगा दें ।

जब साधना में सफलता प्राप्त हो जाय, अर्थात जिस उद्देश्य हेतु आपने यह साधना प्रारम्भ की थी, उसमें सफलता प्राप्त हो जाय, तब भी इस यन्त्र को पात्र से बाहर न निकालें, जब आप वशीकरण हुए व्यक्ति को अपने प्रभाव से मुक्त करना चाहते हैं, तभी इस ताबीज को शहद में से बाहर निकाल कर जल से धो दें, इसके साथ ही वशीकरण प्रभाव क्षीण हो जाता है ।

इस साधना में मन्त्र जप के समय "शुद्ध मूंगा माला" का उपयोग करना ही शास्त्रोक्त कथन है ।

ऊपर जो साधनाएं दी गई है, वे सरल एवं कई साधकों द्वारा उपयोग में लाई गई हैं, आप भी पूर्ण विधि-विधान सहित इन साधनाओं को प्रयोग में लाएं तथा अपने जीवन को उन्नति की दिशा की ओर अग्रसर करें ।



संसार की प्रत्येक साधना में सफलता मिल सकती है

आत्म-शक्ति साधना से

जहाँ तक शरीर का प्रश्न है, सभी व्यक्तियों में किसी प्रकार का विशेष भेद नहीं होता है, शरीर की संरचना, शरीर की शक्ति, आदि का निर्माण वैज्ञानिक दृष्टि से समान रूप से होता है, उचित ध्यान एवं आहार के अभाव से कुछ व्यक्ति निर्बल रह जाते हैं, किसी-किसी को कोई शारीरिक व्याधि हो जाती है, जिसके कारण उसका शरीर थोड़ा अशक्त हो जाता है, यह शरीर संबंधी प्रक्रिया अत्यन्त सामान्य प्रक्रिया है, और सही देखा जाए तो इसे किसी भी दृष्टि से प्रधानता नहीं दी गई है।

संसार में जितने भी महान पुरुष, योगी, एवं अपने क्षेत्र में सर्वाधिक उन्नति करने वाले व्यक्ति, शारीरिक दृष्टि से बहुत अधिक बलशाली नहीं थे, ऐसा उनमें क्या था जिसके कारण वे उन्नति के उस चरम शिखर तक पहुंचे, न तो अब्राहिम लिंकन बलशाली और सुन्दर थे, जिन्होंने पूरे अमेरिका में क्रांति ला दी, और न ही लेनिन अति सुन्दर और बलशाली थे, जिन्होंने बोल्शेविक क्रांति द्वारा पूरे रूस के करोड़ों लोगों को अपने साथ में लेकर हजारों साल से चले आ रहे, जारशाही शासन का अंत कर दिया, अपने देश में ही महात्मा गांधी का उदाहरण देखा जा सकता है, वे तो राजनैतिक व्यक्ति थे, साहित्यिक क्षेत्र में, कला क्षेत्र में भी यही स्थिति पूर्ण रूप से है, पिकासो पांच फुट दो इंच ऊंचाई वाला, अत्यन्त सामान्य व्यक्तित्व वाला पुरुष था, लेकिन उसने चित्रकारी जगत में ऐसे कीर्तिमान स्थापित किये कि आज भी उसकी एक-एक पेन्टिंग पचास-पचास करोड़ रुपये में बिकती है।

व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री महान कैसे बन जाता है, उसमें ऐसे कौन से गुण होते हैं, जिसके कारण उसका व्यक्तित्व दूसरों से ऊपर उठता ही चला जाता है, महान व्यक्ति अपने रूप, बल, शक्ति के कारण महान नहीं होता है, अपितु इस कारण से महान होता है, कि उसके कार्यों का, उसकी बातों का प्रभाव लाखों करोड़ों लोगों पर पड़ता है, यह शक्ति एक ऐसी आन्तरिक शक्ति होती है, जिसका उद्‌भव उसके शरीर में ही होता है, और उसका विकास होता जाता है, जैसे-जैसे इस आन्तरिक शक्ति का जिसे आत्म-शक्ति भी कहते हैं, का

विकास होता है, वैसे ही वह व्यक्ति साधारण व्यक्ति न रहकर एक ऐसे धरातल पर पहुंच जाता है, जिसकी बात दूसरों को सुननी ही पड़ती है, उससे प्रभावित होना ही पड़ता है।

किसी भी असाधारण व्यक्ति के या तो केवल समर्थक या मित्र होते है, या केवल शत्रु, असाधारण व्यक्ति को नकारा नहीं जा सकता है, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, या तो आप उसकी बातों का समर्थन करेंगे अथवा विरोध, ऐसा क्यों होता है ? कहीं न कहीं उसमें ऐसी शक्ति अवश्य होती ही होगी, वह शरीर जो कि कोशिकाओं का बना हुआ है, इसमें प्रत्येक कोशिकाओं की संरचना विज्ञान के दिये हुए नियमों के अनुसार एक जैसी ही है, फिर भी इतना भारी अन्तर क्यों आ जाता है, एक व्यक्ति अपने एक भाषण द्वारा लाखों लोगों को सम्मोहित कर देता है, और साधारण व्यक्ति अपनी बात अपने मित्र, अपने पड़ोसी, अपने सहयोगी को भी नहीं मनवा सकता है।

इन सब का मूल कारण शक्ति का वह प्रवाह है, जो उनके शरीर में विद्यमान रहती है, और यह कोई कुण्डलिनी चक्र की सप्तम स्थिति नहीं है, जिसे सक्रिय करना असंभव है, शक्ति के प्रवाह को, इस आवेग को, इस स्रोत बिन्दु को जाग्रत करना और इस शक्ति को इस प्रकार पकड़ कर रखना कि वह आपकी इच्छानुसार चले, यही विशेष स्थिति व्यक्ति से व्यक्ति का भेद करती है, जब नदी अपनी इच्छानुसार उफनती है, तो वह बाढ़ का रूप ले लेती है, और विनाश का कारण बन जाती है, और वही नदी जब बांध बनाकर नियन्त्रित कर दी जाती है, तो बिजली उत्पादन, कृषि एवं अन्य कार्यों के लिए अत्यन्त उपयोगी बन जाती है, यही स्थिति शक्ति की भी है, शक्ति को साधारण लोग अपने नियन्त्रण में नहीं रख पाते हैं, वे ऐसे कार्यों में अपनी शक्ति को खो देते है, जिनकी कोई आवश्यकता ही नहीं है।

जिसने भी अपनी शक्ति को, एक विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित कर, उस ओर केन्द्रित कर दिया, तथा अपनी शक्ति के बीज को जाग्रत कर उसका प्रवाह उस कार्य की ओर, उस लक्ष्य की ओर मोड़ दिया, उसे वह सफलता वह लक्ष्य अवश्य प्राप्त हुआ है, चाहे वह संसार का सबसे धनी व्यक्ति हार्वड ह्यूज हो, चाहे महान नाटककार बर्नार्ड शॉ हो, या महान चित्रकार वानगॉग हो, अथवा मार्ग्रेट थ्रेचर हो, इन सभी के परिवार में जिन क्षेत्रों में इन्होंने उच्चतम स्थिति प्राप्त की, उसका कोई सहयोग नहीं था, न ही ऐसी पृष्ठ भूमि थी, और न ही इनके परिवार में ऐसे व्यक्ति थे, जिनका हाथ पकड़ कर ये अपने क्षेत्र में उस स्तर तक पहुंच सके, इनमें केवल एक ही विशेषता थी, कि इन्होंने विपरीत से विपरीत स्थितियों में भी अपनी शक्ति के स्रोत को जाग्रत कर अपने नियन्त्रण में रखा, और यह महान शक्ति ''आत्मशक्ति,' ही है।

मूल शक्ति—आत्मशक्ति

शरीर में विद्यमान सभी शक्तियों को एक सूत्र बिन्दु में पिरो कर अपनी आत्मशक्ति के नियन्त्रण में करना ही साधना की उच्च स्थिति प्राप्त करना है।

यदि शक्ति का शक्ति से टकराव हो जाता है, तो दोनों ही शक्तियां नष्ट हो जाती हैं, और एक शक्ति को दूसरी शक्ति जाग्रत करने में प्रयोग किया जाय, तो वह शक्ति सहस्र गुना बढ़ जाती है, इस आत्मशक्ति को पूर्ण रूप से जाग्रत करने हेतु कुछ विशेष साधना, कुछ विशेष नियन्त्रण, कुछ विशेष प्रक्रियाएं आवश्यक हैं, आत्मशक्ति के पूर्ण विकास हेतु प्राणशक्ति तत्व का चैतन्य होना आवश्यक है, और जब यह प्राणशक्ति चैतन्य हो कर आत्मशक्ति को जाग्रत करती है, तो व्यक्ति में सम्मोहन शक्ति भी अपने आप ही आ जाती है, और इन तीनों शक्तियों का मेल व्यक्ति को इस प्रकार ऊपर

उठा देता है, कि वह केवल महान कार्य करने को ही अग्रसर हो जाता है, उसके छोटे-छोटे लक्ष्य तो अपने आप ही पूर्ण हो जाते हैं।

शक्ति जागरण

जीवन का मूल मन्त्र यह है, कि जो आपके लिए उपयोगी है वही सबसे अधिक आवश्यक है, जब आप उन्नति कर विशेष स्थिति प्राप्त कर सकेंगे, तभी आप दूसरों के लिए उपयोगी बन सकेंगे, शास्त्र कहते हैं, कि व्यक्ति को दानी होना चाहिए, लेकिन दानी बनने के लिए धन आवश्यक है, धनवान व्यक्ति ही दानी हो सकता है, कर्ज में डूबा हुआ, दूसरों की दया पर जीने वाला साधारण व्यक्ति नहीं, अतः यह आवश्यक है, कि जीवन में ऐसा ऊंचा उठा जाय, कि दूसरे आपकी ओर अपना सिर उठा कर ही देख पाएं, और इसके लिए यदि साधना करनी पड़े, तप करना पड़े, तन्त्र का सहयोग लेना पड़े, घोर प्रयत्न करना पड़े, तो भी यह सब कुछ भी नहीं है, क्योंकि जीवन का मूल स्थितप्रज्ञ हो कर एक स्थान पर बैठे रहने में नहीं है, अपितु एक ऊंचाई को पार कर दूसरी ऊंचाई को प्राप्त करने में है।

आत्मशक्ति का प्रभाव

जो साधक अपनी शक्ति को जाग्रत कर लेता है, उसके शरीर में स्थित सभी चक्र जाग्रत हो जाते हैं, उसके शरीर में एक ऐसी ऊर्जा आ जाती है, जो कि उसे निरन्तर उत्साह एवं प्रेरणा प्रदान करती है, वह व्यक्ति जिससे भी बात करता है, उसके मनोभावों को, उसके हृदय की बात को जान लेता है, उसे यह मालूम पड़ जाता है, कि वह व्यक्ति मुझे सहयोग देगा या धोखा देगा, उसके कार्य में कौन-कौन सहयोगी होंगे, उसके मित्र कौन हैं, उसके शत्रु कौन है, उसे जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त करने के लिए किस मार्ग से गुजरना है, घटनाएं उसके सामने चित्र की तरह स्पष्ट होती रहती हैं, और वह उसी के अनुसार अपने कार्यों को आगे बढ़ाता है, आत्म शक्ति जाग्रत होने के पश्चात संसार को, गृहस्थ धर्म को त्यागना थोड़े ही है, अपितु आपका जो कार्य है, आपका जो जीवन है, उसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना है, कोई भी साधना आपको अपने कार्य से विमुख होने को नहीं कहती, क्योंकि आपने अपने जीवन में जिन सांसारिक स्थितियों का निर्वाह किया है, उन कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए आगे बढ़ना ही साधना-सिद्धि है, जंगल में जाना, भगवे वस्त्र पहिनना, योग नहीं है, यह तो कर्म क्षेत्र को छोड़ना, जीवन के युद्ध से पीठ दिखा कर भागने के समान है।

आत्म शक्ति साधना हेतु किसी भी प्रकार का बन्धन नहीं है, जो भी साधक अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहता है, चाहे वह युवा हो अथवा वृद्ध, शारीरिक दृष्टि से अक्षम हो अथवा पूर्ण रूप से सक्षम, कम पढ़ा-लिखा हो अथवा विशेष शिक्षित, पुरुष हो अथवा स्त्री, इससे कोई सम्बन्ध नहीं है, वृद्धावस्था भी इस साधना को सम्पन्न करने से रोक नहीं सकती है, क्योंकि जीवन का अन्त वृद्धावस्था नहीं है, अन्त तो इच्छाओं के, आत्म शक्ति के अन्त होने का है, जब शक्ति स्रोत ही समाप्त हो जाय, वह अन्त है। इस स्रोत को न बुझने दें, इसे साधना की अग्नि देते रहें, तभी आप जीवन के आकाश में प्रकाशमान हो सकेंगे।

इस साधना के लिए कोई समय सीमा नहीं है, किसी भी दिन जब आपको लगे कि मैं इस साधना को सम्पन्न करना चाहता हूं और मुझे कीड़े-मकोड़ों की भांति जीवन नहीं जीना है, आपमें संकल्प की भावना आ जाय, आपमें आगे बढ़ने की भावना आ जाय, उसी दिन साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।

साधना विधि

इस तथ्य से तो नकारा नहीं जा सकता है, कि कोई भी कार्य सम्पन्न करने के लिए किसी न किसी रूप से, कोई सहयोग तो लेना ही पड़ेगा, साधना में पूर्ण सफलता हेतु निश्चय ही गुरु का आशीर्वाद, मार्गदर्शन, एवं शुद्ध उपकरण अर्थात् सामग्री आवश्यक है, आत्म शक्ति साधना जिस दिन भी प्रारम्भ करें, उस दिन सर्व प्रथम गुरुदेव का ध्यान कर एक माला गुरु मंत्र का जप करें, क्योंकि गुरु ही वह परम तत्व है, जो कि आपके आत्म तत्व को, आपकी शक्ति को पूर्ण रूप से जाग्रत कर सकने में समर्थ है।

इस साधना में चार पदार्थ आवश्यक है, १-"हत्था जोड़ी" जो कि सिद्धि प्रदायक पदार्थ है, २- "आत्मशक्ति सिद्धि यंत्र" जिसे सामने रख कर मन्त्र और साधना सिद्धि की जाती है, ३- **"गोमतीचक्र"** जो शरीर स्थित चक्रों को जाग्रत करने में सहायक है, ४- "मूंगामाला" जो इस क्षेत्र में साधना के लिए सिद्धि प्रदायक कही गई है। इन चारों वस्तुओं का विशेष उपयोग है, और सही रूप में इन्हें स्थापित कर साधना सम्पन्न करनी चाहिए। इस साधना को यदि सूर्योदय से पहले सम्पन्न कर लिया जाय तो उचित रहता है। साधना के समय किसी पात्र में आत्म शक्ति यंत्र को स्थापित कर पीले वस्त्र के चारों ओर एक लाल घेरा अष्ट गन्ध से अवश्य बना दें, यह घेरा आत्म शक्ति के नियन्त्रण का घेरा है, वायुमण्डल में प्रवहित होने वाली शक्ति को नियन्त्रण कर शुद्ध गोमती चक्र एवं हत्था जोड़ी द्वारा यंत्र में प्रवाहित होने की प्रक्रिया जो कि मंत्र जप के द्वारा संभव है, आत्म शक्ति साधना की अन्य वस्तुओं को अर्थात हत्था जोड़ी एवं गोमती चक्र को भी यंत्र के पास ही रखना है, और केवल लाल चावलों द्वारा तथा केसर द्वारा इनकी पूजा करनी है।

इस साधना में सवा लाख मंत्र जप आवश्यक है, और यह साधना २१ दिन में साधक को अवश्य ही पूरी कर लेनी चाहिए।

मन्त्र

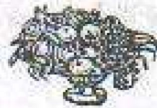
॥ ॐ ऐं आं आत्म तत्वाय सौं सां श्रीं श्रीं हुं ऐं ॥

साधना में शुद्ध रूप से मंत्र जपें तो निश्चय ही उचित रहता है अतः यदि इसे कंठस्थ न कर सकें तो एक साफ कागज पर लिख कर अपने सामने अवश्य रख दें, और जप करें।

२१ दिन साधना पूर्ण हो जाने के पश्चात् यंत्र को छोड़ कर अन्य सभी सामग्री उसी पीले वस्त्र के साथ ही नदी अथवा तालाब अथवा कुंए में विसर्जित कर दें।

जब शक्ति जाग्रत होती है वह आवाज नहीं करती है, लेकिन आपको आभास अवश्य करा देती है, आपके एक-एक करके चक्र जाग्रत होने लगते हैं, यदि इस स्थिति की शुरुआत हो जाय तो यह आपकी साधना की प्रथम सफलता है, लेकिन यहीं नहीं रुकना है, बहुत आगे बढ़ना है अतः साधना क्रम निरन्तर बनाये रखें।

जब-जब विशेष परिस्थिति आये, मूंगा माला से आत्म शक्ति मंत्र का जप अवश्य करें। जिस प्रकार बीज को पूर्ण फलदार, छायादार वृक्ष बनाने के लिए निरन्तर उसकी देख-रेख, खाद, जल आदि आवश्यक है उसी प्रकार जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए निरन्तर साधना निश्चय ही आवश्यक है।



यक्ष दिवस ८-९-९०

मैं
हर हालत में इस बार
यक्ष
सिद्ध करके बता दूंगा

तन्त्र साहित्य के रूप में वर्तमान समय में जिस प्रकार का साहित्य पाठकों को पढ़ने को मिलता है, वह निश्चय ही शुद्ध एवं सही नहीं है, मूल ग्रन्थों से शुद्ध विवेचन, लेखकों की निरन्तर कमी होती जा रही है, तन्त्र साहित्य अत्यन्त प्राचीन साहित्य है, जिसे हमारे ऋषि, मुनियों, देवताओं ने स्वयं सम्पन्न कर रचना की है, तन्त्र साधना में शैव भाव प्रधान रूप से रहा है, और यही तन्त्र साधना का मूल आधार है।

तन्त्र साधना एवं साहित्य को गलत दृष्टिकोण से पाठकों के सामने प्रस्तुत करने वाली पुस्तकों की कमी नहीं है, जिससे प्राय साधक एवं पाठक के मन में तन्त्र के नाम से ऐसी भ्रान्ति बन गई है, कि तन्त्र साहित्य केवल मैली विद्या का ही साहित्य है, और इसका उपयोग केवल गलत कार्यों के लिए ही किया जा सकता है, ऐसा विचार तन्त्र का अपमान तो है ही, उन सभी ऋषियों तथा तन्त्र साहित्य के जनक भगवान शिव का भी अपमान है, इसमें कुछ रूप में पाठकों का भी दोष नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उनके सम्मुख जो सस्ती पुस्तकें प्रस्तुत की जाती है, उनमें उल्लेख ही कुछ इस प्रकार का होता है, कि विचारशील पाठक भी भ्रम में पड़ जाता है, यही कारण है, कि वर्तमान युग में साधना के प्रति लोगों की अरुचि बढ़ती जा रही है, तन्त्र-मन्त्र प्रधान देश में यह स्थिति निश्चय ही अवनति का कारण भी है।

तन्त्र साधना के नाम पर श्मशान साधना, नग्नता और व्यभिचार, बलि आदि का उल्लेख एवं धारणा सामान्य पाठकों में पाई जाती है, और विज्ञान को मानने

वाला, तर्क करने वाला, कोई भी पाठक अथवा साधक इसे पूर्ण रूप से अपने गले नहीं उतार पाता है, वास्तविक रूप में इस प्रकार की स्थिति बिल्कुल नहीं है, तन्त्र साधना में किसी भी रूप में श्मशान आवश्यक नहीं है, और न ही इसमें किसी प्रकार का ऐसा क्रिया कलाप है, जिसे गलत तरीके से सम्पन्न किया जाय, तन्त्र तो एक अनोखा ज्ञान है, जो कि गुरु-शिष्य परम्परा से वेदों से निकल कर आगे बढ़ा है, तन्त्र के प्रधान प्रवर्तक ऋषियों में दुर्वासा, विश्वामित्र, गौतम, याज्ञवल्क्य, कात्यायन तथा भृगु ऋषियों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, तन्त्र तो सुप्त हुई कुण्डलिनी चक्र को जाग्रत करने की क्रिया है, जिससे साधक प्रचण्ड शक्ति को जाग्रत करता है, और यह प्रचण्ड शक्ति उसे साधारण से असाधारण बना देती है।

जन्म लेने वाला प्रत्येक प्राणी चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री, अपने जीवन में अपने ज्ञान, अपनी बुद्धि से आगे भी कुछ विशेष लक्ष्य निर्धारित करता है, कुछ विशेष इच्छाएं रखता है, और इन इच्छाओं की पूर्ति हेतु प्रयास भी करता है, इस हेतु उसे दूसरे का सहयोग भी लेना पड़ता है, इस सहयोग का माध्यम यह आवश्यक नहीं, कि इस लोक के ही प्राणी हों, अपितु अन्य रूप से प्राप्त शक्ति भी उसकी सहयोगी हो सकती है।

लोक से आगे लोक

यह तो निश्चय ही सत्य है, कि इस लोक के अतिरिक्त भी दूसरे लोक हैं, प्राणी जीवन के पश्चात दूसरे लोक में पहुंचता है, और कई दृष्टियों से वह लोक इस से उत्तम है, जहां दुःख, पीड़ा, ईर्ष्या नहीं है, इसके उपरान्त भी कुछ विशेष नियम अवश्य हैं, इस लोक में श्रेष्ठ देव पुरुष निवास करते हैं, इसके उपरान्त भी इस देव योनि में भी तपस्या तथा पुण्य के क्षीण हो जाने पर कुछ ऐसे कार्य हो जाते हैं, जिनके कारण इन श्रेष्ठ शक्तियों वाले देव प्राणियों को भी अपनी गलतियों का परिणाम भोगना पड़ता है, और इस परिणाम को भोगने के लिए पृथ्वी लोक ही आना पड़ता है।

यक्ष-शापित देव

यक्ष आदि के सम्बन्ध में कुछ विशेष भ्रान्तियां बनी हुई हैं, इन्हें पीड़ा देने वाला राक्षस प्राणी ही माना जाता है, जबकि यह सर्वथा असत्य है, यक्ष ऐसे शापित देव प्राणी हैं, जिन्हें अपने श्राप का निवारण करने हेतु पृथ्वी लोक पर आना पड़ता है, और श्राप की अवस्था कुछ वर्ष भी हो सकती है, और कई सौ वर्ष भी, यक्ष को जो देव शक्ति होती है, वह श्राप के प्रभाव से नष्ट नहीं होती है, लेकिन एक बात विशेष रूप से महत्व की है, कि शापित देव अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं कर सकते हैं, लेकिन दूसरों के लिए सब कुछ करने में समर्थ रहते हैं, इनका निवास किसी का भी घर, कोई भी वृक्ष, तालाब, नदी का किनारा, महल, किला अर्थात कहीं भी हो सकता है।

जहां देवताओं की पूजा दास भाव से की जाती है, अर्थात साधक प्रार्थना कर कुछ प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, वहीं यक्ष को अपना दास बना कर सब कुछ प्राप्त करने में समर्थ रहता है, यदि एक बार यक्ष वश में हो जाता है, तो साधक को हर प्रकार से सहयोग देता रहता है, साधक को अपनी प्रबल शक्ति प्रदान कर देता है।

यक्ष रक्षा-कारक, आपत्ति-विनाशक प्रारूप है, जो कि हर समय साधक की सहायता के लिए तत्पर रहता है, एक बार सिद्ध हो जाने पर साधक को मन चाहे कार्य करने में सरलता रहती है, चाहे वह कार्य दूसरों को वश में करने का हो, अथवा शत्रुओं पर प्रहार करने का हो,

या हजारों मिल दूर पड़ी वस्तु को अपने पास बुलाने का हो, जो कार्य सामान्य प्रक्रिया से सम्भव नहीं है, वह यक्ष साधना से सम्भव है ।

यक्ष साधना-सिद्धि

ऐसे उदाहरण आपने कई बार पढ़ें होंगे, कि अमुक योगी ने हजारों लोगों को क्षण भर में भोजन प्राप्त कर खिला दिया, एक क्षण में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच गये, यह सब यक्ष सिद्धि के कारण ही सम्भव है, यक्ष ऐसा दास है, जो कि अपने स्वामी के लिए हर प्रकार का कार्य करने को तत्पर रहता है ।

इस वर्ष ८ सितम्बर ९० आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी शनिवार को यक्ष दिवस है, और इस साधना के लिए यह सर्वोत्तम मुहूर्त है, जहां अन्य समय में कई महीनों तक निरन्तर साधना करने से भी यक्ष सिद्धि प्राप्त नहीं हो पाती है, वहीं इस शनिवार को यह साधना करने से आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते है ।

यह साधना आवश्यक नहीं है, कि केवल पुरुष साधकों द्वारा ही सम्पन्न की जाये, स्त्रियां भी इस साधना को सम्पन्न कर सकती हैं, इस साधना के लिए साधक को अपनी आत्म शक्ति व इच्छा शक्ति को प्रबल बनाना आवश्यक है, उसमें यह आत्म विश्वास होना चाहिए, कि मैं इस साधना को सम्पन्न कर सकता हूं, और दूसरों से मैं श्रेष्ठ हूं तथा यक्ष को अपने वश में कर सकता हूं ।

साधना-विधि

इस साधना में साधक उक्त विशेष दिन को रात्रि के प्रथम प्रहर अर्थात १० बजे के बाद ही साधना प्रारम्भ करे, यदि साधक का गुरुत्व, गुरु-भक्ति भावना प्रबल है, तो उसे किसी प्रकार से डरने की आवश्यकता नहीं है, वह निश्चय ही इसे श्रेष्ठ रूप से सम्पन्न कर सकता है ।

इस साधना में विशेष "यक्ष सिद्धि यंत्र" की आवश्यकता रहती है, और पत्रिका-पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी, कि यह मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त यक्ष सिद्धि यन्त्र पत्रिका साधकों को उपहार स्वरूप प्रदान किया जा रहा है, अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर तेल का दीपक तथा दूसरी ओर धूप, लोबान अवश्य जलाएं, सुगन्धित इत्र आदि का प्रयोग सर्वथा वर्जित है, यन्त्र काली सरसों पर स्थापित करें, तथा यन्त्र पर सर्वप्रथम सिन्दूर अवश्य चढ़ाएं, मन्त्र का जप क्रोध मुद्रा में अपनी दाहिनी मुट्ठी बांध कर, ग्यारह अथवा इक्कीस माला का जप करें ।

यह सम्भव है, कि मन्त्र जप के समय कुछ विचित्र ध्वनियां आ सकती है, आंखों के सामने कुछ ऐसे चित्र उपस्थित हो सकते है, लेकिन इन सब स्थितियों से न घबराते हुए मन्त्र जप का क्रम चालू रखें, प्रत्येक माला की समाप्ति के साथ जिस पात्र में धूप सुलग रहा है, उसमें सरसों अवश्य डालते रहें, इस साधना का मन्त्र जप **"काली हकीक माला"** से ही सम्पन्न करना चाहिए ।

मन्त्र

।। ॐ आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा महाराजे
पराक्रमे काली कालिके यक्ष राजायै हुं फट् ।।

जब साधक के सामने यक्ष राज उपस्थित हो जाय, तो साधक उससे वचन ले ले, और दाहिने हाथ की मुट्ठी से जमीन पर पांच बार प्रहार करे, तथा इक्कीस बार थोड़ी जोर से इस मन्त्र का जप करता रहे ।

इसके पश्चात साधक अपने स्थान से उठ कर स्नान कर ले, और सामान्य वस्त्र धारण कर ले, प्रथम रूप में ही एकदम असम्भव कार्य हेतु आज्ञा नहीं देनी चाहिए, धीरे-धीरे पूर्ण वश में हो जाने पर अपनी आज्ञा का प्रभाव बढ़ाना चाहिए।

यक्ष माला का प्रयोग अर्थात इस साधना के लिए अभिमन्त्रित माला का अन्य साधना में प्रयोग सर्वथा वर्जित है।

उक्त दिवस को इस श्रेष्ठ समय पर योग्य साधकों को निश्चय ही यह साधना प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

आप एक नया पत्रिका सदस्य बना कर "यक्ष राज यन्त्र" को सर्वथा मुफ्त प्राप्त कर सकते हैं, नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर हमें भेज दें, या इसकी नकल करके प्रतिलिपि बना कर भी भेज सकते हैं।

यक्ष राज-सिद्धि यन्त्र उपहार प्रपत्र

मैं पत्रिका सदस्य हूं, इसलिए मेरा यह प्रपत्र प्राप्त होते ही शीघ्र "यक्ष राज सिद्धि यन्त्र" भिजवा दें, मैं १०५)रु० की वी०पी० छुड़ाने का वायदा करता हूं, वी० पी० छुटने पर आप मेरे निम्न मित्र को पत्रिका सदस्य बना दें, मेरा नाम पता (जहां आपको यक्ष राज सिद्धि यन्त्र १०५) रु० की वी० पी० से भेजना है)।

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

वी०पी० छुटने पर आप मेरे निम्न मित्र को पत्रिका सदस्य बना दें, और उसे पूरी पत्रिकाएं भेज दें, १०५)रु. की रसीद आप मुझे उपरोक्त पते पर भिजवा दें।

मेरे मित्र का नाम ....

मेरे मित्र का पता ....

....

नोट:–

स्वामीजी रुद्रप्रतापानन्द से प्राप्त "यक्ष राज सिद्धि यन्त्र" हमारे पास अत्यन्त ही कम है, अतः जो पहले शीघ्र यह प्रपत्र भेजेंगे, उन्हें ही हम यह "यक्ष राज सिद्धि यन्त्र" भिजवा सकेंगे।



शारदीय नवरात्रि (१९-९-९० से २७-९-९० तक)

हम मां के द्वारे आये हैं
प्राणों में
बसाने आये हैं

शरद काल में नवरात्रि पूजन को शास्त्रों में वार्षिक महापूजा कहा गया है, और इसका महत्व हिन्दू धर्मशास्त्रों में होली, दीवाली तथा जन्माष्टमी के समान ही है, प्रत्येक प्रदेश में इसे विभिन्न रूपों में मनाया जाता है, लेकिन इसका जो महत्व एवं साधनात्मक प्रभाव है, वह अत्यन्त विलक्षण सिद्धिदायक है।

नवरात्रि के संबंध में यह लिखा गया है कि नवरात्रि का प्रत्येक दिन शुभ एवं मुहूर्त सिद्ध है, अतः किसी भी शुभ कार्य हेतु इन नौ दिनों में मुहूर्त दिखाने की आवश्यकता ही नहीं है।

"शरद् काले महा पूजा क्रियते या च वार्षिकी" अर्थात पूरे वर्ष भर पूजा की जाय अथवा शारदीय नवरात्रि में विधि-विधान से पूजा की जाय, फल प्राप्ति शारदीय नवरात्रि में ही विशेष है, नौ शक्तियों से युक्त होने के कारण इस विशेष साधना काल को नवरात्रि कहा गया है, प्रत्येक दिवस शक्ति-दिवस है, और प्रत्येक दिवस की साधना विशेष फलदायक है, शास्त्रों में कथा आती है, कि जब भगवान राम को सीता-हरण का ज्ञान हुआ तो उन्होंने उसे परास्त करने हेतु दुर्गा-साधना पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न की, इस सम्बन्ध में शारदा तिलक में श्री नारद ने जो वर्णन किया है, कि यह दुर्गा देवी आद्या शक्ति है, दुःख नाशिनी, सनातनी शक्ति दायिनी सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली, सभी शक्तियों की कारक है। यह विष्णु की पालन शक्ति, ब्रह्मा की सृजन शक्ति तथा रुद्र की संहार शक्ति है। विश्व की प्रत्येक शक्ति इसी महान शक्ति से उत्पन्न होती है, यह परम विद्या तथा वेदों की आद्या है।

अलग-अलग प्रदेशों में इसके पूजन का विधान अलग-अलग प्रकार का है, शारदीय महापूजा, शक्ति पूजा है और शक्ति संचय का यह श्रेष्ठ काल है, इसके पूजा का अधिकार प्रत्येक साधक को है, बंगाल में यह महापूजा सामूहिक रूप से तथा व्यक्तिगत रूप से, विशेष आयोजन से की जाती है, वहीं गुजरात, महाराष्ट्र, कुमायूं क्षेत्र में इसका विधान अलग प्रकार का है, जो व्यक्ति इस महा-पूजा को विधि-विधान सहित सम्पन्न करता है, उसे महा-



शक्ति का अंश प्राप्त हो जाता है, और वह स्वयं शक्ति-मय हो जाता है।

नवरात्रि का महत्व

नवरात्रि के महान महत्व को कुछ शब्दों में स्पष्ट करना असंभव है, दुर्गा के तीन स्वरूप— महासरस्वती, महाकाली तथा महालक्ष्मी हैं, ये तीनों ज्ञान-शक्ति, इच्छा-शक्ति एवं क्रिया-शक्ति हैं, मनुष्य के सतोगुण, रजोगुण, एवं तमोगुण की प्रतीक हैं, इन तीनों शक्तियों का जिस व्यक्ति के जीवन में योग्य अनुपात रहता है, वह व्यक्ति परम शक्तिमान क्रियाशील, धार्मिक दृष्टि से परम सुखी, एवं ज्ञान सागर में परितृप्त रहता है।

नवरात्रि में दुर्गा साधना ही क्यों ?

महाविद्याओं की साधना का महत्व तांत्रिक ग्रन्थों में विशेष रूप से लिखा गया है, ये दस महाविद्याएं— काली, तारा, षोडसी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, और कमला महादुर्गा के ही अंश हैं, दुर्गा की साधना ही इन महाशक्तियों की साधना है।

"मार्कण्डेय पुराण" में दुर्गा की स्तुति करते हुए कहा गया है कि—

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पाता हि यो जगत् ।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।।

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतो तस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमानभवेत् ॥

विश्व की सृष्टि, रक्षा एवं नाश करने वाले भगवान नारायण को जो अपने अधीन रखने की क्षमता रखती है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश जिनकी इच्छा से शरीर धारण करते हैं, उस महान शक्ति की स्तुति शब्दों के वश में नहीं है।

शारदीय नवरात्रि पूजन का जो महत्व है, वह पूरे वर्ष की विभिन्न साधनाओं से अधिक है, नवरात्रि में वायुमण्डल का प्रत्येक अणु-परमाणु अत्यन्त क्रियाशील हो जाता है, और यदि इस समय विधि-विधान से पूजन किया जाय तो वह साधना सहस्र गुना अधिक फल देती है। "महाकाल संहिता" में लिखा है, कि—जो शारदीय महापूजा का आचरण नहीं करता है, उसे विभिन्न दुःखों को भोगना पड़ता है।

"दुर्गा सप्तशती" में उल्लिखित है, कि—

शरद्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः ॥

सर्व बाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

अर्थात् शरद कालीन इस महान नवरात्रि पूजन का महत्व अत्यन्त महान है, इस महापूजा से साधक सब बाधाओं से विमुक्त हो जाता है, और धन-धान्य सौभाग्य की प्राप्ति होती है। मनुष्य के भविष्य को उज्ज्वल करने वाली इस महापूजा के संबंध में कोई संशय नहीं है।

महापूजा कैसे करें ?

नवरात्रि के नौ दिन वे विशेष दिन है जिनमें साधक प्रति क्षण महाशक्ति साधना में संलग्न रहे, और यह साधना उसे गुरु के माध्यम से प्राप्त हो, तो फल प्राप्ति में कोई संशय नहीं रहता है, गुरु के निर्देश में की जाने वाली साधना में किसी प्रकार की भूल अथवा दोष नहीं रहता है, क्योंकि गुरु-गीता में लिखा है, कि—इस जगत में जो दिख रहा है और जो नहीं दिख रहा है, वह सब गुरुमय ही है, नवरात्रि में गुरु का आशीर्वाद पूर्ण रूप से प्राप्त होना गुरु के श्री चरणों में पूजन करना, एवं उनके निर्देश से साधना करना साधक का सौभाग्य ही है।

नवरात्रि के नौ दिन विभिन्न साधनाओं के क्षण है, इस महाशक्ति साधना पर्व में विधि-विधान सहित साधना होना अत्यन्त आवश्यक है, इस हेतु इस साधना में प्रत्येक क्षण का, प्रत्येक उपकरण का, अपना विशेष महत्व है। इस साधना काल में साधक को किसी भी प्रकार का संकोच न करते हुए पूर्ण रूप से शास्त्रोक्त विधि-विधान से पूजन सम्पन्न करना चाहिए जिससे उसे पूर्ण फल प्राप्त हो सके।

विभिन्न पुस्तकों में, जो कि बाजार में उपलब्ध हैं, साधना के संबंध में बहुत अधिक भ्रान्तियां दी हुई हैं, अलग-अलग प्रकार से पूजन का विधान दिया हुआ है, जिससे साधक स्थिर मन से एक रूप में पूजन नहीं कर सकता, इस स्थिति को देखते हुए तथा पत्रिका के योग्य साधकों के आग्रह को देखते हुए पूर्ण विधि-विधान स्पष्ट किया जा रहा है, इसी के अनुसार प्रत्येक साधक को आचरण करना चाहिए।

नवरात्रि साधना के कुछ विशेष नियम है, जिन्हें साधकों को अवश्य पालन करना चाहिए। इस नवरात्रि में साधना प्रत्येक दिन ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् ५ बजे से पहले उठ कर स्नान कर साधना चिन्तन अवश्य प्रारम्भ कर दें, पूरे नवरात्रि में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें तथा जहां तक संभव हो, मौन व्रत धारण करें, जितना आवश्यक हो, उतना ही बोलें, अनावश्यक वार्तालाप, तर्क-वितर्क में अपनी शक्ति को नष्ट न करें, पूरे साधना समय में अपने को पूर्ण रूप से समर्पित करते हुए श्रेष्ठ भाव रखें, सात्विक भोजन ग्रहण करें, तथा यदि पूर्ण रूप से उपवास न रख सकें तो एक समय भोजन करें। जहां शरीर शुद्धि आवश्यक

है, वहां मन शुद्धि, एवं आत्म शुद्धि भी आवश्यक है।

नवरात्रि साधना में जिन-जिन सामग्री एवं उपकरणों की आवश्यकता रहती है, वह सभी सामग्री साधक पहले से उचित व्यवस्था कर लें जिससे कि साधक पूर्ण रूप से सिद्धि प्राप्त कर सके, नवरात्रि साधना में प्रत्येक दिन का विशेष महत्व है, आगे पूर्ण विधि-विधान सहित नवरात्रि पूजन स्पष्ट किया जा रहा है। साधकों के लिए यह आवश्यक है, कि इसी रीति से पूजा सम्पन्न करें।

प्रतिपदा पूजा

नवरात्रि का यह प्रथम दिवस सभी अर्थों में महत्वपूर्ण है, प्रथम दिन साधक अपने गुरु का विधि-विधान सहित पूजन करें, गुरु पूजन की विधि पहले दी हुई है, साधना समय प्रातः सूर्योदय के पश्चात् स्नान इत्यादि कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, पूजा स्थान में शुद्ध आसन पर स्थान ग्रहण करें, पूजा स्थान में "महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती" के चित्रों के अलावा भव्य "दुर्गा का चित्र" हो, "गुरु चित्र" भी पूजा स्थान में रखें। प्रथम दिन पूजा में विशेष सामग्री में शुद्ध घी का दीपक, धूप, अगरबत्ती, एक बड़ा तांबे का पात्र, पुष्प, चावल, पंचपात्र में जल, शुद्ध घी, दूध, दही, शहद, सिन्दूर कुंकुम, काजल, मौली, पुष्प-माला, फल, नारियल, प्रसाद, सुपारी, इत्यादि के साथ मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त "दुर्गा यन्त्र" आदि की व्यवस्था अपने पास पहले से ही कर लें। यदि साधक गणपति की लघु मूर्ति की व्यवस्था कर सके, तो उत्तम है अन्यथा एक बड़ी सुपारी पर मौली लपेट कर गणपति का आह्वान कर स्थापना की जा सकती है।

सर्व प्रथम गुरु का ध्यान कर गुरु मंत्र का जप कर गुरु पूजन कर नवरात्रि पूजन की आज्ञा एवं आशीर्वाद प्राप्त करें, उसके पश्चात् बड़े पात्र में जो कि कलश के समान हो, आधा जल भर कर उसके ऊपर, नारियल पर तथा कलश पर, स्वास्तिक बनायें, अपने कार्यों में पूर्ण सफलता हेतु दाएं हाथ में चावल तथा जल ले कर संकल्प करें—

ॐ अद्येत्यादि मम् शारदीयार्चन निमित्यर्थं घट-स्थापन-कर्माहं करिष्ये।

यह संकल्प कर जल छोड़ दें, इसके पश्चात् गणपति पूजन प्रारम्भ करें, इस कलश को चावलों की ढेरी पर जहां एक बार स्थापित करें, वहां से बार-बार हटाना नहीं है। एक चावल की ढेरी पर गणपति की स्थापना करें, और गणपति का ध्यान करते हुए उनका आह्वान एवं प्रार्थना करें जिससे कि आपके सभी कार्य पूजन बिना किसी विघ्न के पूर्ण हो सकें, गणपति के सम्मुख दूध, चावल, पुष्प, कुंकुम, अर्पित करें।

गणपति स्थापना के पश्चात् मुख्य पूजा प्रारम्भ होती है, इस पूजा में दुर्गा यंत्र, दुर्गा चित्र के सम्मुख स्थापित करें, इस समय दीपक अवश्य जला देना चाहिए तथा गणपति पूजन में वर्ष, ऋतु, मास, पक्ष तथा नाम से जो संकल्प लिया था, वही संकल्प दोहराते हुए दुर्गा पूजा की प्रार्थना एवं कामना करें इसके पश्चात् दुर्गा का आह्वान निम्न मंत्र से करें—

॥ ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्य दर्प निषूदिनी
पूजां गृहाण सुमुखि त्रिपुरे शंकरप्रिये ॥

इसके पश्चात् "दुर्गा यन्त्र" एवं "दुर्गा चित्र" के सम्मुख पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत, चन्दन, सिन्दूर, अक्षत, नैवेद्य, सुपारी, अर्पित करें इस अर्पण के पश्चात् दुर्गा के मूल मंत्र का जप प्रारम्भ करें। यदि साधक प्रथम दिन दुर्गा सप्तशती का पूरा पाठ कर सकता है, तो अवश्य करें अन्यथा "हकीक माला" से निम्न मंत्र का जप ग्यारह माला अवश्य करें। साधना कार्य प्रारम्भ करने से पहले यह आवश्यक है कि साधक अपने स्वयं के तथा परिवार के सभी सदस्यों के तिलक लगाएं।

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥

इस मंत्र का शुद्ध रूप से जप करने के पश्चात् साधक गुरु स्मरण कर अपना स्थान छोड़ सकता है तथा नित्य-कर्म सम्पन्न कर सकता है। जो साधक दुर्गा सप्तशती का संस्कृत पाठ नहीं कर सकते, वे उसके हिन्दी अनुवाद का पाठ कर सकते हैं।

द्वितीया- तृतीया पूजन कार्य

यह दोनों दिवस महालक्ष्मी दिवसों के रूप में जाने जाते हैं, और इन दोनों दिनों दुर्गा के प्रधान स्वरूप महालक्ष्मी की साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

सर्व प्रथम स्थान शुद्धि कर, प्रथम दिन जिस प्रकार गणपति पूजन किया था, उसी प्रकार गणपति पूजन प्रति दिन करना अनिवार्य है, इसके पश्चात् सामने लकड़ी के बाजोट पर **"लघु श्री यन्त्र"** के दोनों ओर मंत्र सिद्ध **"दो मोती शंख"** स्थापित करें, एक मोती शंख पर कुंकुंम तथा दूसरे मोती शंख पर लाल पुष्प अर्पित करें, इन दोनों मोती शंखों की स्थापना विशेष सिद्धिदायक है, ये मोती शंख स्थिर लक्ष्मी प्रयोग सिद्ध हैं जिससे कि लक्ष्मी साधक के घर में स्थिर होकर रहती है।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र से श्री महालक्ष्मी का ध्यान करें—

अमलकमलसंस्था तद्रज: पुंजवर्णा
करकमल धृतेष्टा भीतियुग्माम्बुजा च।
मणिकटक विचित्रालंकृताकल्पजालै:
सकल भुवनमाता सन्ततं श्री: श्रियै न: ॥

महालक्ष्मी का ध्यान एवं स्थापना करने के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र की ग्यारह माला जप कमलगट्टा की माला से करें, लक्ष्मी के सभी मन्त्रों का जप "कमलगट्टे की माला" से ही करने का विधान है। जहां प्रथम दिन साधना में केवल सुपारी अर्पित की जाती है वहीं महा लक्ष्मी साधना में पान के साथ सुपारी, लौंग, इलायची, तथा केसर अर्पित करने का विधान है, इसके पश्चात् निम्न मंत्र का जप प्रारम्भ करें।

मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं महालक्ष्म्यै नम: ॥

इस मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरने के पश्चात् यदि साधक दुर्गा सप्तशती का पाठ भी करे तो उसके लिए उचित रहता है, सिद्ध लक्ष्मी का यह प्रयोग नवरात्रि के दिनों में विशेष रूप से सम्पन्न करना चाहिए, तृतिया के दिन भी यही पूजा-विधान पूर्ण रूप से है, इस दिन साधक सिद्ध लक्ष्मी बीज मंत्र का जप करने के साथ-साथ श्री सूक्त के सोलह पाठ भी अवश्य सम्पन्न करें।

तृतीया के दिन आरती के पश्चात् सायं को दोनों मोती शंख सफेद वस्त्र में बांध कर अपने घर में अथवा दुकान में तिजोरी के पास रख दें।

चतुर्थी-पंचमी पूजा विधान

ये दोनों दिवस दुर्गा की दूसरी महाशक्ति सरस्वती के साधना दिवस हैं और इन साधना दिवसों का महत्व भी लक्ष्मी साधना दिवसों के महत्व से किसी भी प्रकार से कम नहीं है। सरस्वती देवी मस्तिष्क की देवी हैं, और वह तत्व गुण प्रधान देवी ज्ञान-विज्ञान, बुद्धि, विवेक, विचार शक्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं, इन गुणों के बिना लक्ष्मी प्राप्त नहीं हो सकती, ये गुण ही साधक की कार्य शक्ति, इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति का विकास करते हैं।

सर्व प्रथम गणपति पूजन कर गुरु ध्यान करें, इस दिवस की साधना में "सरस्वती यंत्र" स्थापित करें, इसके अतिरिक्त इस दिन साधक श्वेत वस्त्र धारण करें, देवी का पूजन गन्ध, पुष्प, सुपारी के अतिरिक्त श्वेत पुष्पों से तथा दूध से करें, नवरात्रि के पूरे नौ दिन दीपक निरन्तर अवश्य ही जलते रहना चाहिए, सर्व प्रथम स्वयं तथा

परिवार के सभी सदस्यों को चन्दन का तिलक कर मौली बांधें तथा सरस्वती देवी का आह्वान करें, प्रत्येक साधना के पहले संकल्प आवश्यक है, सरस्वती का ध्यान निम्न मंत्र से करें —

ऐमम्बितमे नदीतमे देविसमे सरस्वति ।
अप्रशस्त इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि ।।

अर्थात् मातृ गणों में श्रेष्ठ, नदियों में श्रेष्ठ, देवियों में श्रेष्ठ महासरस्वती आपकी पूजा के अभाव में असमृद्धि ही रहती है, अतः हे माता ! हमें प्रशस्ति, महानता, धन-सम्पत्ति प्रदान करें ।

अब दांए हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक (अपना नाम) अपने परिवार सहित हूं, महासरस्वती आपकी पूजा एवं साधना सम्पन्न कर रहा हूं, मुझे पूर्ण सफलता प्रदान करें ।

अपने सामने देवी पूजन हेतु यंत्र स्थापित कर चन्दन से अपने सामने "ह्रीं" लिखें, पूजा स्थान में **"सरस्वती का चित्र"** भी अवश्य स्थापित करें । अब **"आठ सिद्धिफल"** लेकर सरस्वती के आठ स्वरूपों का ध्यान करते हुए अपने सामने यंत्र के आगे एक पंक्ति में स्थापित करें, सबसे पहले एक सिद्धिफल लेकर देवी के निम्न स्वरूपों का उच्चारण करते हुए क्रमशः स्थापित करें—

वाग्वादिनी स्वाहा, चित्रेश्वरि स्वाहा, ऐं कुलजे स्वाहा, अन्तरिक्ष सरस्वति स्वाहा, घट सरस्वति स्वाहा, नीला सरस्वति स्वाहा, किणिकिणि सरस्वति स्वाहा, कीर्तीश्वरि सरस्वति स्वाहा ।

इस प्रकार इन आठ सरस्वती स्वरूपों को स्थापित कर प्रत्येक देवी के सामने एक-एक सुपारी रखें तथा पुष्प अर्पित करें, अब अपने सामने स्थापित लकड़ी के बाजोट की ग्यारह बार प्रदक्षिणा करें और सरस्वती बीज मन्त्र का जप प्रारम्भ करें ।

बीज मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः ।।

ग्यारह अक्षरों के इस विशिष्ट मन्त्र की ग्यारह मालाएं जप करना आवश्यक है, इसके पश्चात् अपना स्थान छोड़ें ।

सायंकाल को दुर्गा सप्तशती का एक पाठ सम्पन्न करें, यही विधान पंचमी के दिन सम्पन्न कर ग्यारह बालक-बालिकाओं को भोजन कराएं ।

षष्ठी-सप्तमी पूजा विधान

जिस प्रकार जीवन में ज्ञान, धन, शीलता, नम्रता, आवश्यक है, उसी प्रकार शौर्य, साहस भी आवश्यक है, शौर्य, ज्ञान और धन की रक्षा कर सकता है, ये दोनों दिवस दुर्गा के तीसरे महास्वरूप, महाकाली साधना के दिन हैं, इन दोनों दिनों में महाकाली शक्ति अपनी प्रचंड रूप में रहती है, साधना करने वाले साधक को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए उसकी सदैव रक्षा करती है, तथा उसके शत्रुओं का विनाश करती हैं ।

महाकाली साधना साधक को अकेले ही सम्पन्न करनी चाहिए, और षष्ठी के दिन दैनिक पूजा विधान में तो प्रातः गणपति पूजा, गुरु पूजा, एवं दुर्गा पाठ सामान्य रूप से करें, काली की पूजा केवल रात्रि को ही सम्पन्न की जानी चाहिए ।

इस साधना में लाल रंग का प्रयोग विशेष रूप से आवश्यक है, अतः साधक, साधना हेतु लाल वस्त्र धारण करें, इसके अतिरिक्त रक्त चन्दन, लाल पुष्प, ताम्र पात्र, **"तांबे का छोटा सर्प"** **"महाकाली यंत्र"** **"शूकरदन्त"** विशेष रूप से आवश्यक हैं । रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् शान्त मन से पूजा प्रारम्भ करें, गुरु चरणों में ध्यान कर काली की स्तुति करें,–हे महाकाली ! अपने दस हाथों में खड्ग, चक्र, गदा, धनुष-बाण, परिघ,

शूल, भुशुण्डि, कपाल और शंख को धारण करने वाली, दिव्य आभूषणों से सज्जित, नीलाश्म विद्युत् कान्ति, एवं प्रकाश वाली, हे महादेवी ! मैं आपका ध्यान एवं पूजन कर रहा हूं ।

इस पूजा में यंत्र को ताम्र पत्र में रख कर सबसे पहले घी से स्नान कराएं फिर दुग्ध धारा से और फिर जल धारा से शुद्ध कर साफ लाल वस्त्र से पोंछ कर "ॐ ह्रीं कालिकायोगपीठात्मने नमः" बोल कर पुष्प के आसन पर स्थापित कर रक्त चन्दन, यंत्र पर लगाएं तथा पुष्प अर्पित करें, प्रत्येक दिशा में काली का ध्यान कर एक-एक पुष्प अवश्य फेंकें, इसके पश्चात् शूकरदन्त को रक्त चन्दन से रंग कर यंत्र के आगे स्थापित कर दें, यह प्रयोग रक्षा प्रयोग है, जिससे साधक को अभीष्ट शक्ति प्राप्त होती है।

इसके पश्चात् काली बीज मन्त्र का जप "काली हकीक माला" से सम्पन्न करें, इस समय साधक का ध्यान कहीं विचलित नहीं होना चाहिए ।

बीज मन्त्र

।। ॐ क्रीं कालिके स्वाहा ।।

इस बीज मन्त्र की पांच मालाएं जप करना आवश्यक है, चार मालाएं नमस्कार मुद्रा में तथा पांचवीं माला मुट्ठी बांध कर शौर्य मुद्रा में अपने विरोधियों, शत्रुओं के नाश का ध्यान करते हुए करनी चाहिए ।

पांचवीं माला मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पहले जिस शत्रु का नाश करना चाहते हैं, एक कागज पर लाल अक्षरों में उसका नाम लिख कर शूकरदन्त के साथ मौली से बांध दें, तथा मन्त्र जप करने के पश्चात् पूजा कार्य पूरा होने के पश्चात् वह कागज शूकरदन्त सहित गाड़ दें ।

इसके पश्चात् महाकाली की आरती कपूर से सम्पन्न करें, तथा यंत्र को पूजा स्थान में एक ओर स्थापित कर दें ।

अष्टमी पूजा-विधान

इस अष्टमी को महाअष्टमी भी कहा जाता है, इस दिन यज्ञ, होम आदि का विधान है, सर्व प्रथम जहां यज्ञ कार्य सम्पन्न करना हो, उस स्थान पर लकड़ी के बाजोट पर एक ओर गणपति को स्थापित करें, दूसरी ओर ब्रह्मा को स्थापित करें, दूसरे बाजोट पर चावल से नौ चौकोर खाने एक साथ बना कर नौ सुपारी रखें, और नवग्रह स्थापित करें ।

यज्ञकी अग्नि प्रज्वलित कर, सभी देवी देवताओं का ध्यान कर, नवार्ण मन्त्र का जप करते हुए तिल और जौ की घी के साथ आहुति दें, इसके पश्चात् दुर्गा सप्तशती के चौथे अध्याय के प्रत्येक मन्त्र का जप करते हुए, प्रत्येक मन्त्र के अन्त में स्वाहा बोल कर आहुति दें, आहुति के समय सामग्री को यज्ञ कुण्ड में समर्पण भाव से अर्पित करना चाहिए ।

इसके पश्चात् यज्ञ स्थान में ही दुर्गा की आरती सम्पन्न करनी चाहिए, ग्यारह दीपक वाली आरती श्रेष्ठ मानी गई है ।

नवमी का दिन केवल समर्पण दिवस है, इस दिन अपने सभी रोग, दुःख, शोक समर्पित करने का विधान है और इस हेतु प्रातः साधक स्नान कर, पीले वस्त्र धारण कर नवार्ण मन्त्र "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" का जप करें तथा पूरे आठ दिन में जो साधना-सामग्री, यन्त्र तथा माला के अतिरिक्त काम में आई है, उसे किसी श्रेष्ठ सरोवर, नदी तथा पीपल के वृक्ष में समर्पित कर दें तथा इस दिन ब्राह्मण भोजन कराएं, परिवार में बड़ों के आशीर्वाद प्राप्त करें तथा नवरात्रि साधना का पारायण सम्पन्न करें ।

यह साधना पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न करने से साधक को अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है, तथा बाधाओं और शत्रुओं का विनाश होता है ।

शास्त्रोक्त कथन है, कि शारदीय नवरात्रि में जिस प्रकार से गुरु अपने संरक्षण में साधक को पूजा विधान सम्पन्न कराए, वही सर्वोत्तम विधान है ।

विश्वकर्मा जयन्ती १७-९-९०

जो सफलता अब तक नहीं मिली

वह

सब कुछ इस साधना से मिलेगा ही

प्रत्येक साधक शक्ति का एक घटक होता है और उसे ऊर्जा शक्ति ग्रहण करनी पड़ती है, यह ऊर्जा शक्ति उसे साधना के द्वारा प्राप्त होती है, यह शक्ति सामान्य शक्ति से अलग एक ऐसी विशिष्ट शक्ति होती है, जो उसका निर्माण करती है और उसके लक्ष्य तक पहुंचाती है। यह शक्ति शारीरिक शक्ति न होकर मानसिक शक्ति होती है जो उसके मन के तत्व को चैतन्य कर कुण्डलिनी जाग्रत करती है, जहां योग वायु तत्व की साधना है, वहां मन्त्र आकाश तत्व की साधना है, मन्त्र शब्द का शुद्धतम रूप है और यह विस्फोट का कारक है और विस्फोट से ही शक्ति उत्पन्न होती है, शब्द अर्थात् मन्त्र के लिए किसी विशेष माध्यम की आवश्यकता नहीं पड़ती, यह उपासना कभी भी नष्ट न होने वाली उपासना है क्योंकि जो ध्वनि एक बार हो जाती है, वह कभी नष्ट नहीं होती, भावनात्मक शक्ति की तरंगें और शब्द की लहरें मिल कर मन्त्र बनता है, इन दोनों में जितना सहयोग एवं समन्वय रहेगा उसी रूप में शक्ति उत्पन्न होती है और इसमें इच्छा शक्ति का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

जब साधक साधना के परम तत्व की ओर अग्रसर होता है, तो वह कहता है, "अहं ब्रह्मास्मि" अर्थात् जो दिखाई दे रहा है और जो दिखाई नहीं दे रहा है, जो सगुण है और निर्गुण है, जो चेतन और जो अचेतन है, वह मैं स्वयं हूं, यहां ब्रह्म अर्थात् ब्रह्मा के रूप को ही सर्वोत्कृष्ट माना है।

ब्रह्मा अर्थात् जो निर्माण करता है, जो संरचना करता है, जो कुछ नहीं से सब कुछ प्रगट करता है, वह ब्रह्मा ही है, परम तत्व है, ब्रह्मा कभी शान्त नहीं रहते, क्योंकि निर्माण कभी रुकता नहीं है, इसी प्रकार जो साधक निरन्तर ब्रह्म साधना में गतिमान रहता है, वह एक लक्ष्य पर नहीं रुक सकता, उसे हर बार नये लक्ष्यों की पूर्ति के लिए शक्ति प्राप्त होती रहती है, यही ब्रह्म साधना है, सारभूत स्थिति है।

ब्रह्मा-विश्वकर्मा

संरचना और निर्माण ब्रह्मा के अधीन है, क्योंकि शक्ति, संसार एवं सभी व्यक्तियों का मूल बिन्दु तो वही है इसीलिए ब्रह्मा को विश्वकर्मा भी कहा गया है, जब तक साधक के भीतर शक्ति-उद्भव नहीं होगा तब तक वह साधक निर्जीव है इस शक्ति को प्राप्त करके के लिए हर व्यक्ति अपनी बुद्धि से अपना प्रयास करता है लेकिन जब तक इस शक्ति के मूल विश्वकर्मा को नहीं पहचान लेता अथवा उसकी साधना में पूर्णता नहीं प्राप्त कर लेता, तब तक उसकी अन्य साधनाएं अधूरी हैं, क्योंकि विश्व-कर्मा साधना से उसे शक्ति निरन्तर प्राप्त होती रहती है, उसका शक्ति स्रोत कभी समाप्त नहीं होता है, और यही शक्ति स्रोत उसे निरन्तर गतिमान बनाये रखता है।

जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के लिए अपने माता-पिता का ऋणी है, उसी प्रकार वह उतना ही ऋणी ब्रह्मा का भी है, जो कि जीवन का मूल कारण है, उसके गुणों, शक्ति एवं भावना की संरचना के कर्ता हैं, जो साधक ब्रह्मा की साधना पूर्ण रूप से सिद्ध कर लेता है, उसे किसी भी शक्ति साधना को पूर्ण करने में कठिनाई नहीं होती है, क्योंकि उसके भीतर शक्ति का स्रोत प्रारम्भ हो जाता है, अन्य साधनाएं तो इस शक्ति-स्रोत के विकास की साधनाएं हैं, जब स्रोत ही नहीं बनेगा, तो शक्ति का विकास कैसे सम्भव है, इसलिए प्रत्येक साधक के लिए चाहे वह साधना के किसी भी स्तर पर हो, विश्वकर्मा साधना आवश्यक है।

विश्वकर्मा साधना-मूल तत्व

इस साधना में साधक को उपास्य भाव ही रखना पड़ता है, अर्थात इसमें सेवा भाव से ही साधना सम्पन्न की जा सकती है, जिस प्रकार के भाव का संवेग तीव्र होगा, उसी प्रकार इच्छा शक्ति भी प्रबल बनती जायेगी, और साधना में सफलता तीव्र गति से प्रारम्भ होगी।

यह साधना विवेक बुद्धि को जाग्रति प्रदान करती है, सूक्ष्म से महान बनने की ओर अग्रसर करती है, इसी हेतु इसका महत्व विशेष रूप से है, विश्वकर्मा साधना सृष्टि-कर्ता ब्रह्मा से ऋण उतारने की साधना भी है, जिसके कारण जो मानसिक दबाव तथा ऋण देवताओं का है, वह दूर हो जाता है।

साधना विधि

इस वर्ष नवरात्रि से पहले ही दिनांक १७-९-९० आश्विन कृष्ण चतुर्दशी-सोमवार को विश्वकर्मा जयन्ती है, जो कि अत्यन्त फलकारक है, नवरात्रि से पहले इसका योग बनने से इसका फल अत्यन्त उत्तम हो गया है, क्योंकि इस साधना को पूर्ण करने से नवरात्रि साधना पूर्ण रूप से सफल रहती है।

यह साधना चित्त में शान्ति व बुद्धि देने वाली साधना है, इस साधना को सिद्ध करने वाला साधक अपने धैर्य को कभी भी नहीं खोता है, बड़ी से बड़ी कठिनाई में भी उसे आगे बढ़ने तथा कार्य करने की प्रेरणा मिलती रहती है, और किसी न किसी रूप से सहयोग भी प्राप्त होता रहता है।

इस साधना में गुरु-ध्यान का महत्व विशेष रूप से
साधना दिवस के दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण
र पूजा स्थान में एकदम शान्त वातावरण बनायें, साधक
त वस्त्र धारण करें, तथा अपने सामने एक घी र शुद्ध
ा का दीपक अवश्य जलाएं, यह साधना केवल एक दिन
ी ही साधना है, और शास्त्रोक्त कथन है, कि ब्रह्मा की
धना–विश्वकर्मा साधना, ब्रह्म मुहूर्त में, अर्थात सूर्योदय
दो घड़ी पहिले सम्पन्न करनी चाहिए, इस कारण
वश्यक है, कि साधक प्रातः जल्दी उठ कर यह साधना
रम्भ कर दें।

जहां तक साधना सामग्री का प्रश्न है, इस साधना
केवल "ब्रह्मदण्ड" तथा "शंख माला" की आव-
श्यकता रहती है, अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर श्वेत
त्र बिछा कर उस पर स्वास्तिक का चिन्ह बना कर
बीचोंबीच ब्रह्मदण्ड स्थापित करें, उसके चारों ओर आठ
ारी मौली में लपेट कर स्थापित करें, ये ब्रह्मा की आठ
क्तियों की प्रतीक है, सर्व प्रथम कुंकुम, गुलाल-अबीर,
वत पुष्प द्वारा ब्रह्मा की पूजा विश्वकर्मा मन्त्र
ॐ ब्रह्मायै नमः" से करें, इसमें पुष्प की पंखुड़ियां
८ बार अर्पित करने का विधान है।

विश्वकर्मा साधना में गुरु मन्त्र का जप अत्यन्त
वश्यक है, अतः साधक उपरोक्त न्यास सम्पन्न करने के
ात गुरु रहस्य माला से अथवा जो माला वह गुरु
त्र का जप करने के लिए नित्य प्रयोग में लाता है
से सम्पन्न करें, इसके साथ ही यह संकल्प करे कि मैं,
ा का अंश, ब्रह्म साधना में सब कुछ ब्रह्मा को ही
ित कर रहा हूं।

ब्रह्मा के विशेष मन्त्र का जप करने से पूर्व गायत्री
मन्त्र का जप एक माला करना अत्यन्त आवश्यक है,
क्योंकि गायत्री को ब्रह्मा की पुत्री माना गया है, जिसके
द्वारा सारा ज्ञान इस संसार में है।

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।।

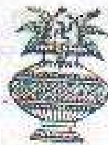
गायत्री मन्त्र की एक माला जप करने के पश्चात
ब्रह्मा के बीज मन्त्र की ग्यारह माला का जप करें।

बीज मन्त्र

।। ॐ ह्रीं शक्तित्रयं ब्रह्मणे नमः ।।

इस बीज मन्त्र की ग्यारह माला जप करने के पश्चात
ब्रह्मदण्ड को केसर तथा चन्दन का तिलक लगायें, इस
ब्रह्मदण्ड को ऐसे स्थान पर स्थापित करें, कि इसे बार-
बार हटाना नहीं पड़े, जो विशेष यन्त्र आदि एक जगह
स्थापित रहते हैं, उनकी शक्ति स्थिर रहती है, अतः
अपने घर में जहां भी उचित स्थान समझें वहां इसे
स्थापित कर दें।

विश्वकर्मा पूजा का उपसंहार गुरु-आरती से संपन्न
करना चाहिए, क्योंकि ब्रह्म-सिद्धि, गुरु-सिद्धि के द्वारा
ही प्राप्त होती है, और ब्रह्मा गुरु तत्व प्रधान देव हैं।



सामग्री जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

बिना प्रामाणिक सामग्री के साधनाओं में सिद्धि प्राप्त होना असम्भव है, क्योंकि साधना का और साधना में सफलता का मूल आधार ही पूर्ण रूप से शुद्ध, मन्त्र सिद्ध, चैतन्य, प्रामाणिक सामग्री है।

इस अंक में जिन साधनाओं को स्पष्ट किया गया है, उनसे सम्बन्धित सामग्री का विवेचन निम्न पंक्तियों में वर्णित है, आप को जिन सामग्रियों की आवश्यकता हो, केवल उसका विवरण लिख कर जल्दी ही भेज दें, हम आपको वह सामग्री वी०पी० द्वारा डाक व्यय लगा कर भिजवा देंगे, जिससे समय से पहले ही यह सामग्री आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जाय और आप विधिवत् साधना सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकें।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
अनन्त सिद्धि प्रयोग	६	श्री विष्णु अनन्त यंत्र	२४०) रु०
		१०८ कमल बीज	६०) रु०
		११ नाभि चक्र	२५५) रु०
पितरेश्वर साधना प्रयोग	१३	पांच सोमेश्वर रुद्राक्ष	२००) रु०
		१५ लघु नारियल	१६१) रु०
		रुद्राक्ष माला	११०) रु०
व्यापार उन्नति साधना	१८	लक्ष्मी यन्त्र	२४०) रु०
		स्फटिक माला	८०) रु०
मनोकामना सिद्धि साधना	१८	शक्ति चक्र	६०) रु०
		मनोकामना पूर्ति बीज	१२०) रु०
मुकदमे में विजय हेतु साधना	१६	विजय तावीज	१५०) रु०
		मूंगा माला	८०) रु०
नौकरी प्राप्ति हेतु मन्त्र साधना	१६	रोजगार तावीज	१२०) रु०
		स्फटिक माला	८०) रु०
वशीकरण प्रयोग	२०	वशीकरण तावीज	३००) रु०
		शुद्ध मूंगा माला	८०) रु०

आत्म शक्ति साधना	२१	हत्था जोड़ी	११०) रु०
		आत्म शक्ति सिद्धि यन्त्र	२४०) रु०
		गोमती चक्र	१२०) रु०
		मूंगा माला	६०) रु०
यक्ष सिद्धि साधना	२८	यक्ष राज सिद्धि यन्त्र	१०५) रु०
		यक्ष माला	१२०) रु०
शारदीय नवरात्रि पूजा	२६	—	—
प्रतिपदा पूजा	२२	दुर्गा चित्र	५) रु०
		गुरु चित्र	२०) रु०
		दुर्गा यन्त्र	२४०) रु०
		हकीक माला	८०) रु०
द्वितीया-तृतीया पूजा	३३	लघु श्री यन्त्र	७५) रु०
		दो मोती शंख	१५०) रु०
		कमलगट्टे की माला	८०) रु०
चतुर्थी-पंचमी पूजा	३३	सरस्वती यन्त्र	१२०) रु०
		पाठ सिद्धि फल	१२०) रु०
षष्ठी-सप्तमी पूजा	३४	महाकाली यन्त्र	१५०) रु०
		तांबे का सर्प	२०) रु०
		शूकर दन्त	७५) रु०
		काली हकीक माला	८०) रु०
विश्वकर्मा साधना	३६	ब्रह्म दण्ड	१५०) रु०
		शंख माला	११०) रु०



शरद पूर्णिमा में दिवस का कोई महत्व नहीं है, यह तो चन्द्र रात्रि पर्व है, जिस रात्रि को चन्द्रमा अपने सम्पूर्ण प्रभाव के साथ अपनी अमृत रश्मियां पृथ्वी पर चारों ओर फैलाता है, इस रश्मियों में जो शक्ति होती है, वह अपने आप में विशेष प्रभावकारी एवं अचूक फल देने वाली कही जा सकती है, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि इस शक्ति को केन्द्रित करके किस प्रकार अपने में समाहित कर लिया जाय।

प्रयोग समय

शरद पूर्णिमा की रात्रि को विशेष पूजन करने का समय रात्रि ९ बज कर ३२ मिनट के पश्चात प्रारम्भ होता है, और यह मुहूर्त अर्द्ध रात्रि तक है, इस समय के बीच में प्रयोग सम्पन्न करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

प्रयोग कैसे करें

प्रयोग मुहूर्त प्रारम्भ होने के पूर्व ही गाय का दूध ला कर स्वादिष्ट खीर बनायें, पर पूजन से पहले इस खीर को जूठा करना निषेध है, पूजन प्रारम्भ करने से पहले पति-पत्नी स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण करें, खुले स्थान पर अर्थात अपने घर की छत पर या बरामदे में, जहां कि चन्द्रमा की किरणें सीधी पड़ सकें, शुद्ध आसन बिछा कर बैठें, अपने बीचोबीच उस खीर को एक बड़े पात्र में जो कि परात के समान या बड़ी थाली के समान खुला हो, डाल दें, अब इस खीर में गुरु ध्यान कर, **"दिव्य कान्ति चन्द्र सुदर्शन महायन्त्र"** शुद्ध जल से धो कर केवल केसर लगा कर खीर के मध्य में डाल दें, परात के नीचे स्वास्तिक अवश्य बनाएं, अब अपने गुरु, कुलदेवता का ध्यान करते हुए २१ बार निम्न मन्त्र का जप करें —

मन्त्र

॥ ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः ॥

इसके पश्चात इस खीर को उसी स्थान पर अलग-अलग कटोरी में ले कर परिवार के सभी सदस्य ग्रहण करें, यन्त्र को दूसरे दिन किसी मन्दिर, देवस्थान आदि में अर्पित कर दें।

यह प्रयोग अत्यन्त सरल होते हुए भी अचूक प्रभावकारी है, शरद रात्रि के इस प्रयोग के फलस्वरूप जहां पुरुषों को आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता, मानसिक शान्ति, रोग बाधा से पूर्ण निवारण प्राप्त होते हैं, वहीं स्त्रियों को शारीरिक दृष्टि से पूर्ण अनुकूलता एवं सौन्दर्य प्राप्त होता है, बालकों को बुद्धि, ज्ञान, स्मरण-शक्ति प्राप्त होती है।

यह विशेष "दिव्य कान्ति चन्द्र सुदर्शन महायन्त्र" पत्रिका सदस्यों को भेजने की व्यवस्था की जा रही है, इस पर न्यौछावर ६०) रु० आ जाता है, इस प्रकार के केवल ५०१ यन्त्र ही सिद्ध किये जा रहे हैं, अतः उचित समय पर आपका पत्र आने पर भेजने की व्यवस्था की जा सकेगी, अतः समय रहते आदेश भेज दें।

रजि० नं० २५३०५/८१ पोस्टल एज. आर. जे. ३६६७/८६-८७

रिकार्ड तोड़ मांग

गुरू पूर्णिमा वीडियो कैसेट

उत्तम तकनीक से निर्मित

- इस बार गुरू पूर्णिमा ओंकारेश्वर में सम्पन्न हुई, और आपने उसमें भाग लिया।
- इस बार इससे सम्बन्धित वीडियो कैसेट अद्वितीय बन पड़ी है, नर्मदा की लहरें, दीपदान, भगवान शिव का पूजन, गुरुदेव के प्रवचन, और आपके चित्र, आपकी उन्मुक्तता, आपका प्रसन्न अद्वितीय व्यक्तित्व।
- पड़ौस, परिवार में दिखाने योग्य और आने वाली पीढ़ियों के लिए धरोहर।

मूल्य २४०) रु० [लागत मात्र]

नोट :- आप मात्र पचास रुपये अग्रिम भेज दें, शेष धनराशि की वी० पी० हो जायगी।

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी
जोधपुर - ३४२००१ (राज.)